ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -14 अंक - 10 अगस्त-II, 2013 (पाक्षिक) माउण्ट आबू मूल्य 7.50 रु.

रक्षाबंधन का दिव्य संदेश

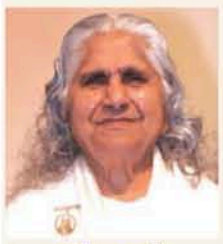

दादी जानकी,
मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज

रक्षाबंधन नकारात्मक भावनाओं से आत्मा की रक्षा के लिए बांधा गया पावन एवं अलौकिक प्रेम का पवित्र बंधन है। ऐसा श्रेष्ठ भाव हृदय की समस्त भावनाओं को परिष्कृत कर देता है। रक्षाबंधन सिर्फ कलाई पर बांधा जाने वाला धागा नहीं है। उसका अर्थ है, मन में पवित्र भावना, निष्काम भावना और तदनुकूल दृष्टि तथा व्यवहार। परमात्मा द्वारा किए जा रहे विश्व परिवर्तन के दिव्य कार्य से पूरे विश्व को अवगत कराना भी इस शुभ अवसर का उद्देश्य है। हरेक के दिल में परमात्म प्रत्यक्षता का झंडा लहराना है। यह अमूल्य समय अलबेलेपन व आलस्य में व्यर्थ गंवाने का नहीं है। हर परिस्थिति में हमें शांत स्वरूप रह सभी को शांति का दान देना है। सभी के साथ मधुरता पूर्ण व्यवहार करने और अपनी भावनाएं बहुत शुभ व श्रेष्ठ रखते हुए ईश्वरीय कार्य करने का संकल्प लें। परमात्मा इस धरा पर आकर सर्व आत्माओं को सुख, शांति व समृद्धि का वर्सा दे रहे हैं। यह संदेश विश्व की हर आत्माओं तक पहुंचाना है। यह समय ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की परिकल्पना को साकार कर रक्षाबंधन का उत्सव मनाना है।

सभी प्यारे आत्मिक भाई-बहनों को रक्षाबंधन के शुभ पर्व पर कोटि-कोटि बधाई हो।

सफलता के लिए हर कार्य करें प्यार से - डॉ. मसंद

केशोद। वर्तमान समय भौतिकता की अंधी होड़ में दौड़ रहा मनुष्य विपुल सम्पत्ति व भौतिक सुख साधनों के बीच भी तनावपूर्ण, निराशा व हताशा भरा जीवन जी रहा है। जीवन में खुशी व आनंद का अनुभव, पैसा कमाने या बच्चों आदि की शादी के बाद नहीं अपितु वर्तमान समय में ही करना है। वर्तमान में ही खुशी से जीवन जीना है।

उक्त विचार डॉ. प्रेम मसंद ने जीवन जीने की कला विषय पर व्यक्त किए। उन्होने कहा कि भविष्य की चिंता और भय में अपना जीवन व्यतीत ना करो। जीवन में सफलता प्राप्त करने की प्रथम चाबी है हर कार्य को प्यार और लगनपूर्वक करना। स्वयं स्वयं से प्यार करना व खुद के साथ बातें करना - यही मेडिटेशन है। स्वयं को तीन बार शाबाशी दो कि मेरा नसीब बहुत अच्छा है, मेरा इस सृष्टि ड्रामा में बहुत अच्छा पार्ट है। मैं विशेष हूँ। बरसती हुई बारिश के बीच बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया।

केशोद के विधायक अरविंद भाई लाडाणी ने जेसीज क्लब और ब्रह्माकुमारीज़ को ऐसे सुंदर कार्यक्रम के लिए शुभेच्छा देते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सिखाया जाने वाला राजयोग मेडिटेशन आराम से जीने का सर्वोत्तम मार्गदर्शन है। हरेक को एक बार यह कोर्स जरूर करना चाहिए। ब्र.कु.रुपा ने आभार व्यक्त किया।

लोगों की भावनाओं का सम्मान करें प्रशासक

ज्ञानसरोवर। ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी, प्रशासक वर्ग को सम्बोधित करते हुए। मंचासीन हैं दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु.बृजमोहन, राकेश मेहता तथा ब्र.कु.हरीश।

ज्ञानसरोवर। दिल्ली व चण्डीगढ़ के मुख्य चुनाव आयुक्त राकेश मेहता ने ब्रह्माकुमारीज प्रशासक सेवा प्रभाग द्वारा 'प्रेरणास्पद प्रशासन के लिए ईश्वरीय प्रज्ञा' विषय पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि जहाँ यह भावना है कि मैं कुछ आपके लिए तभी करूंगा जब आप मेरे लिए कुछ करेंगे तो ऐसी जगह सेवा भाव नहीं है। श्रेष्ठ प्रशासक को आम लोगों की भावनाओं को समझकर कार्य करना होता है ना कि किसी विशेष व्यक्ति को फायदा पहुंचाने के लिए। नीतियों को क्रियान्वित करना ही सफल प्रशासक का काम है। आध्यात्मिक शक्ति श्रेष्ठ प्रशासक बनने में मदद करती है। कठिन परिस्थितयों से उठने के लिए डिटैचमेंट जरूर चाहिए। इससे स्थिति को समझने एवं हल निकालने की शक्ति मिलती है। सकारात्मक वायब्रेशन्स से हम किसी भी परिस्थिति का सामना कर सकते हैं। राज करने की नहीं बल्कि सेवा करने की भावना पर आधारित प्रशासन हो। सबके प्रति समान दृष्टि व सबको सम्मान देने की भावना हो। मदद की दृष्टि व धीरज की जरूरत है। भरोसे व विश्वास की कमी को आध्यात्मिकता व पॉजिटीव वायब्रेशन्स से दूर किया जा सकता है। आध्यात्मिकता से विकारों पर विजय प्राप्त करने में मदद मिलती है व विचारों में परिवर्तन आता है। पद का अहंकार अध्यात्म से दूर हो सकता है। मेडिटेशन से निगेटीव विचार समाप्त होते हैं। रोज मेडिटेशन से निर्णय करने की शक्ति व लोगों का सामना करने की शक्ति बढ़ती है।

ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने कहा कि यह कर्म क्षेत्र है अत: मनुष्य ऐसे कर्म करे जो घर-घर को स्वर्ग बनाए। भगवान ने हमें पार्ट बजाने के निमित्त बनाया है। अच्छे कर्म करने से पवित्रता, शांति, प्रेम, खुशी, शक्ति आ जाती है। डोंट वरी, नो प्राबलम, इन दो शब्दों को -शेष पेज 8 पर..

सफल राजनीति के लिए अध्यात्म का समावेश आवश्यक

ज्ञान सरोवर। ऐसा लग रहा है जैसे हम सभी किसी स्वर्ग लोक में आ गये हैं। यह हमारा भाग्य है। जो आत्माएं यहाँ आई हैं उन्हें अवश्य ही ईश्वरीय आशीष प्राप्त होगा। ऐसी अलौकिक शांति, अनुशासन एवं प्रेम को शब्दों में व्यक्त करना असंभव है।

उक्त विचार इलाहाबाद के सपा विधायक सत्यवीर मुन्ना ने ब्रह्माकुमारीज राजनेता सेवा प्रभाग द्वारा 'स्वर्णिम युग के निर्माता : राजनेता' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होने कहा कि हम बेशक नर्क से स्वर्ग में पहुँचे हैं मगर इस बात का अफसोस है कि फिर से वापस उसी नर्क में जाना होगा। मगर मैं आप सभी को यह विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि हम वहाँ इस स्वर्ग की छटा को अवश्य ही बिखेरेंगे। यहाँ के कण कण में व्यवस्था पिरोने वाला वह संस्थापक कितना महान होगा? बिना अध्यात्म के कोई राजनीति कभी सफल नहीं हो पाएगी। हमें नींद से जगा दिया गया है। हमने समझ लिया है कि हम सभी शरीर नहीं आत्माएं हैं।

ज्ञानसरोवर परिसर की निदेशिका ब्र.कु.डॉ.निर्मला ने कहा कि आज के भारत और पूर्व के भारत में बहुत बड़ा फर्क आ गया है। प्राचीन भारत में जब देवी-देवताओं का राज्य था तब धर्म सत्ता एवं राज्य सत्ता दोनों ही एक के हाथ में थी। तब के देवी देवताओं की हम आज तक भी पूजा अर्चना करते हैं। आज धर्म सत्ता एवं राज्य सत्ता दोनों ही अलग-अलग हो गये हैं। जब दोनों सत्ताएं पुन: एक हाथ में आएंगी तब फिर से भारत स्वर्ग बनेगा। इसकी जिम्मेवारी सिर्फ राजनेताओं के हाथ में नहीं है बल्कि सभी को इसके लिए प्रयत्न करने होंगे। सभी को हिंसावृति, लोभवृति एवं स्वार्थ का त्याग करना होगा। वह शक्ति मिलेगी आध्यात्मिकता का प्रशिक्षण प्राप्त करने से।

प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि यह ऐसा देश है जहाँ नारियों की पूजा होती है, आज भी हम मंदिरों में देवियों की पूजा अर्चना तो करते ही हैं। मगर संसार द्वारा अपनी अंतिम अवस्था को प्राप्त हो जाने के कारण आज यहाँ हर तरह का पापाचार हो रहा है। यह परिवर्तन की वेला है। एक बार फिर से स्वर्णिम युग की स्थापना का कार्य परमात्मा ने प्रारंभ कर दिया है।

ज्ञानसरोवर। दीप प्रज्जवलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.आशा, ब्र.कु.बृजमोहन, सत्यवीर मुन्ना,विधायक, ब्र.कु.डॉ.निर्मला तथा अन्य।

रक्षाबंधन के पावन पर्व की वास्तविकता

रक्षाबंधन के त्योहार के बारे में अधिकतर लोगों की यह मान्यता चली आती है कि यह त्योहार भाई द्वारा बहन की रक्षा का संकल्प लेने का प्रतीक है। साथ-साथ यह भी कहा जाता है कि यह त्योहार हमारे देश में चिरकाल से मनाया जाता रहा है। यदि ये दोनों बातें मान ली जायें, तो निम्नलिखित प्रश्न उठने स्वाभाविक हैं।

क्या तब राजा का शासन कमज़ोर था?- यदि हमारे देश में हर बहन अपने भाई को हर वर्ष रक्षा सूत्र बाँधती थी, तो क्या हमारे देश में अपराध इतना बढ़ा हुआ था कि हर कन्या, माता, बहन को भय बना हुआ था और वह अपनी लाज को खतरे में महसूस करती थीं? इतिहास ने तो यह बताया है कि यहां चोरी-चकारी भी नहीं होती थी, बल्कि घरों के दरवाज़े खुले रहते थे। इसके अतिरिक्त यह भी कहा जाता है कि राजा के गुप्तचर वेश बदलकर पता लगाते थे कि किसी पर अत्याचार तो नहीं हो रहा, कोई दु:खी तो नहीं है और कोई अपनी जान व माल को खतरे में तो महसूस नहीं करता? यहां तक कहा जाता है कि राजा स्वयं भी वेश बदलकर अपनी प्रजा की हालत का पता लगाता था। तब राजा का मुख्य कर्तव्य ही अपने प्रदेश को बाहर के आक्रमणों से और अपने राज्य के भीतर के कुछ इने-गिने अपराधी लोगों से रक्षित करना होता था। ऐसी स्थिति में रक्षा की समस्या का ऐसा विकराल रूप तो रहा ही नहीं होगा कि हर बहन, हर भाई को हर वर्ष राखी बाँधे?

- ब्र.कु.गंगाधर

क्या प्राचीन काल में उपनगरों में ऐसे अपराध होते होंगे?- फिर उस काल के भारत में कोई इतने बड़े-बड़े महानगर तो होते नहीं थे, जैसे कि आज दिल्ली, कलकत्ता, मुंबई या अन्य ऐसे शहर। तब तो भारत आज की अपेक्षा भी अधिक कृषि प्रधान ही देश था जिसमें अधिकतर ग्रामों, उपनगरों या छोटे-छोटे नगरों में ही लोग बसे हुए थे और उनमें मेल-जोल और लेन-देन ऐसा होता था जैसे कि एक बड़े परिवार के सदस्यों में होता है। तब लोग अपने ग्राम के लोगों से प्राय: परिचित होते थे और वह मर्यादा और नैतिकता पर भी ध्यान देते थे। तब ऐसी स्थिति में अपहरण, छेड़-छाड़ या लाज लूटने की वारदातें भला कैसे हो सकती थीं? तब तो हर व्यक्ति अपने गाँव की बहन को, दूसरे गाँव में चले जाने पर भी, सदा 'अपने गाँव की बहन' मानकर एक भ्रातृत्व स्नेह की दृष्टि से व्यवहार करता था। ऐसी व्यवस्था में और ऐसे वातावरण में भला अपने मान की रक्षा को एक समस्या मानकर अपने भाई को राखी बाँधने का प्रश्न ही कैसे उठ सकता था?

नामकरण, मुण्डन, उपनयन आदि संस्कारों की तरह इसकी आयु निश्चित क्यों नहीं?- हमारे देश के कुछ संस्कार ऐसे हैं, जो कि एक विशेष आयु आने पर किए जाते हैं, अत: यदि लाज की रक्षा का प्रश्न रक्षाबंधन त्योहार से जुड़ा होता, तो कन्या का एक विशेष आयु प्राप्त करने के बाद और विवाह से पहले ही रक्षाबंधन मनाने की रस्म प्रचलित होती। तीन वर्ष की कन्या, जिसकी लाज की रक्षा का प्रश्न ही नहीं उठता, द्वारा अपने 2 वर्ष की आयु के भाई को, जो कि रक्षा करने में बिल्कुल अक्षम है, इस दृष्टिकोण से राखी बाँधने का क्या प्रयोजन?

क्या क्षत्रिय रक्षा नहीं करते थे?- हमारे देश के बारे में तो यह कहा गया है कि यहां रक्षा करने का कर्तव्य क्षत्रियों का था। यदि किसी पर अत्याचार होता या कोई दुराचार पर ही उतर आता, तो क्षत्रिय लोग दुराचार का अन्त करने के लिए अपनी जान तक की बाज़ी लगा देते। आततायियों का सामना करना वे अपना धर्म मानते। **तब क्या ऐसा माना जाये कि देश में शताब्दियों से ऐसे क्षत्रिय ही नहीं रहे थे कि जो माताओं-बहनों की रक्षा के लिए अपने क्षात्र-बल का प्रयोग करते और अपने 'धर्म' का पालन करते!** बहनों द्वारा भाइयों को राखी बाँधने का अप्रत्यक्ष अर्थ तो यही निकलता है कि न क्षत्रिय, न राजा, न राजा का आरक्षक दल ही रक्षा करत थे और न देश में कोई नैतिकता ही रही थी कि मातायें-बहनें अपनी लाज को सुरक्षित समझतीं। ये सब मानना तो गोया ज्ञात और अज्ञात इतिहास के बिल्कुल विरूद्ध बात करना और अपने देश, अपने धर्म और अपने प्राचीन समाज की मिथ्या ग्लानि करना और सत्यता के बिल्कुल विपरीत जाना है, क्योंकि

- शेष पेज 4 पर...

सर्व सम्बंधों की याद से सर्व शक्तियों की प्राप्ति होगी

संगमयुग का हर दिन प्यारा लगता है। गीत में है बाबा आपका प्यार बतलाया नहीं जाता, खाते-पीते हम आशिक उस माशूक को याद किये बिगर रह नहीं सकते। दोनों ही एक दो को याद करते हैं। हम बच्चों का बाप से प्यार है परन्तु बाबा कहता है आशिक माशूक की तरह प्यार हो। उसके सिवाय और कोई याद ही न आवे, कोई नज़र ही न आवे, ऐसा प्यार हो। जिसका यादगार दिलवाड़ा मन्दिर में है क्योंकि दिल, मन, बुद्धि, चित्त, संस्कार चारों ओर से देखो, दिल में सच्चाई-सफाई है?

विचार करो आशिक माशूक की याद, फिर बाप बच्चे की याद, फिर सर्व सम्बन्धों की याद का जो टेस्ट है, वह कैसा है! सर्व सम्बन्धों की शक्ति से सर्व शक्तियों की प्राप्ति होती है। हर सम्बंध की शक्ति अपनी है, वो मेरी माँ है तो जब माँ के रूप में याद करते हैं तो भी कितना अच्छा लगता है। माँ-बाप के सम्बंध से भी कईयों को सखा का सम्बंध बहुत अच्छा लगता है। यूँ तो सब सम्बंध चाहिए।

बाबा करन-करावनहार बन करके सवायें करा रहा है, तो सेवा की खुशी अलग है, इतनी सेवा करते थकते नहीं हैं। तो सेवा की शक्ति अलग है, सम्बंध की शक्ति अलग है। अगर इस तन से यज्ञ सेवा इतनी नहीं की है, मन कहां चला जाता है तो समर्पण नहीं है। जहां मेरा तन होगा, वहां मेरा मन होगा। जहां मेरा मन होगा..। मन तन में फंसा हुआ नहीं है, मन तन से अलग है। तो मन से मनमनाभव, फिर मध्याजीभव। यह सब बाबा ने साक्षात्कार से स्पष्ट देखा है, अनुभव किया है परोक्ष अपरोक्ष रूप से। तो देह के सम्बंध से अगर थोड़ा लगाव है तो वो भगवान का प्यारा नहीं बन सकता है। कहाँ वो एक सर्वशक्तिवान का साथ, सर्व सम्बंध, कहाँ देह के अनेक सम्बंधों के साथ सम्बंध, वह एक से सर्व सम्बंध, वह अनेक सम्बंधों में बुद्धि जो बिखरी हुई है, पैसा याद आया, घर याद आया, मोह वश कुछ याद आया तो गया इसलिए नष्टोमोहा स्मृति-स्वरूप बनने से अन्त मते सो गते, जनक का मिसाल सेकेण्ड में जीवनमुक्ति। पतित-पावन परमात्मा बाप अपने प्यार की सकाश से, वायब्रेशन्स से हमको अपने जैसा पावन बना रहा है। यज्ञ सेवा तो भले करो, पर एकानामी से रहना, यज्ञ की एक एक पेनी (पैसे) से सारे विश्व की सेवा हुई है। एकनामी, उसके नाम से ही सेवा है, ईश्वर अर्थ है, इससे एकाग्रता की शक्ति अन्दर बढ़ती है। विचार करो एक सेकेण्ड में एकनामी, एक के ही नाम से काम हो रहा है, इतनी सारी वृद्धि हुई है तब तो भगवान कौन है, कैसा है...रचना जिसकी इतनी सुन्दर वो रचता कैसा होगा। परन्तु अन्तर-मन में समेटने की, समाने की शक्ति हो। कभी बुद्धि चंचल न हो, हलचल में न आवे। बातें तो होंगी, सारी कारोबार करते हुए बाबा को देखा है। दीदी दादी को देखा है। अभी हम सब क्या कर रहे हैं? जो बाबा के मुख्य अनन्य बच्चे हैं, न सिर्फ समर्पण हुए हैं, बाबा मैं तेरा हूं, तू मेरा है...प्रैक्टिकल प्रमाण दिखाया है। सबूत है, यह समर्पण है। अपने मन, वाणी, कर्म, संकल्प, समय को श्रीमत अनुसार सफल किया है, तो करावनहार बाबा उसी से यज्ञ का हर कार्य सफल कराता है।

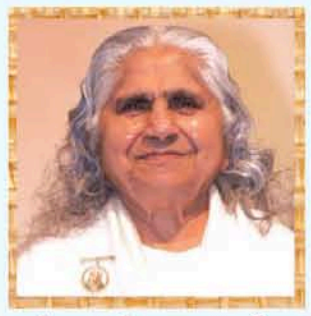

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

मैं आत्मा अपनी स्थिति को देखूँ, परिस्थितियाँ आयेंगी, पर स्व-स्थिति में रहने से चली जायेंगी। यह भगवान की मेहरबानी है, वो तो आयेंगी ज़रूर, पर उसमें बाबा को साथी बना करके, साक्षी हो करके पार्ट प्ले करो तो मजा आयेगा। चेक करें, किसके लिए भी ग्लानि न हो, भले कोई हमारी ग्लानि करने वाला भी हो। वह मुझे टेस्ट कर रहा है, वो ग्लानि अन्दर तो नहीं जाती है ना! फर्क नहीं पड़ता है क्योंकि सच जो होता है, वो कहता नहीं है कि मैं सच्चा हूं, वह सच झूठ को खत्म करने वाला है, इतना सच है। मेरा बाबा सत्य, ज्ञान सत्य, जो कार्य-व्यवहार है वो भी सत्यता से चल रहा है। आदि से अब तक यज्ञ सत्यता के आधार से चलता आया है। पवित्रता मन की, सत्यता व्यवहार में। भले कुछ भी हो, न दु:ख देना, न दु:ख लेना, शान्ति और प्रेम से काम लो। तो बाबा ने प्यार से समझाया है, सिखाया है, गोद में बिठाके अमृत पिलाया है, गले का हार बनाके, नयनों का नूर बनाके साथ लेके जा रहा है, साथ रहेंगे, साथ चलेंगे।

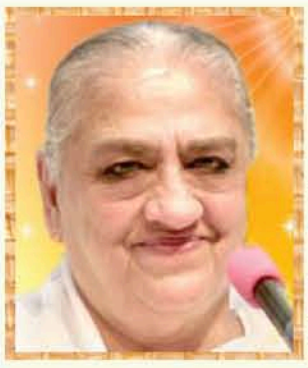

आत्मिक स्वरूप में रहने का अभ्यास ही सेफ्टी का साधन

सब मौजों की दुनिया में चले गये! कभी साइलेंस की दुनिया, कभी मौजों की दुनिया, दोनों ही हमारे लिए है। अब एक सेकेण्ड में बाबा कहे एकदम शान्त, तो हो सकते हैं ना! एक सेकेण्ड में बाबा ने कहा ओम् शान्ति, तो ओम् शान्ति। फिर कहें रास करो तो रास कर लेंगे! जो बाबा की आज्ञा, वह सेकेण्ड में पालन करने वाले। यही प्रैक्टिस करनी है क्योंकि अभी समय देखो कैसा नाज़ुक आ रहा है, अभी बाबा कितने समय से अचानक, अचानक शब्द बोलता था। अचानक का खेल देख लिया ना! पहले से ही बाबा ने दिखा दिया कि यह तो होना ही है। अव्यक्त बापदादा से फॉरेनर्स पूछते थे बाबा, इण्डिया वालों को तो कई सवारियां है, ये नहीं मिलेगा तो वो मिलेगा वा पैदल भी थोड़ा किया तो पहुंच जायेंगे, लेकिन हम क्या करेंगे? हम तो एरोप्लेन के बिना पहुंच ही नहीं सकते। हमारे पास तो और कोई सवारी नहीं। तो बाबा ने कहा अगर तुम योगयुक्त होंगे तो आपका प्लेन चलेगा, पीछे सब होगा। ऐसे योगयुक्त हो जो टचिंग आवे, इतनी एकाग्रचित्त अवस्था चाहिए क्योंकि उस समय आप परमात्म-इशारे को कैच कर सकें। और कोई बात याद नहीं आवे बस, मैं आत्मा हूँ और बाबा मेरे साथ है।

आज भी बाबा ने आत्मा का कितना पाठ पढ़ाया, कैसे, किसको आत्मा का साक्षात्कार कराओ। तो खुद आत्मा रूप में स्थित होंगे तो दूसरों को भी होगा ना। तो चलते-फिरते यह देखो मैं आत्मा हूँ, यह याद है? मैं आत्मा यह काम कर रही हूं, मैं आत्मा चल रही हूं, मैं आत्मा...यह आत्मा का ज्ञान जो है ना, वह बिल्कुल पक्का हो। शारीरिक भान बार-बार याद न आ जाए, मैं फलाना हूं, यह कितना जल्दी याद आता है। हमारे नाम से दूसरे को भी बुलायेंगे तो भी कान जायेगा मेरे को बुला रहे हैं, भले दूसरा हो। तो बॉडी-कॉन्सेस कितना पक्का है, ऐसे ही मैं आत्मा हूं, यह पक्का हो। प्रैक्टिकल आत्मा के रूप में स्थित होने का अभ्यास होगा तभी ऐसे आत्मा दिखाई देगी। दूसरे को भी दिखाई दे कि यह आत्मा ही है, शरीर दिखाई ही नहीं देवे, आत्मा का रूप ही उन्हों को दिखाई दे। ऐसा समय आयेगा, तभी बाबा आत्मा का ज्ञान पक्का करा रहा है। और जब आत्मिक रूप में स्थित होते हैं तभी कार्य अच्छा होता है। आत्मिक रूप में होंगे तब तो सफलता होगी, तो यह अभ्यास चाहिए सारे दिन में। बीच-बीच में देखो, आत्मा रूप में स्थित हूं? भले काम-काज करो, ऐसे थोड़े ही काम नहीं करेंगे। मैं आत्मा यह कार्य कर रही हूं।

आत्मा का ज्ञान अभी से ही पक्का हो, समझो कोई भी कार्य कर रहे हो तो यह स्मृति आवे मैं आत्मा यह कार्य कर रही हूं, भले हाथ चलें लेकिन मैं आत्मा हूं यह स्मृति में आवे। मैं आत्मा इन हाथों से यह कर रही हूं, इतना आत्मा का ज्ञान पक्का हो। शुरू-शुरू में बाबा ने हमें साक्षात्कार में ऐसे बहुत दृश्य दिखाये कि हम बहनों पर अशुद्ध दृष्टि वालों की बुरी नज़र पड़ी और हम अदृश्य लाइट-लाइट दिखाई दिये, तो वो कैसे भाग गये और हमारी सेफ्टी हुई। तो अभी भी बुरी दृष्टि से देखने वालों को हमारा यह शरीर दिखाई नहीं देवे, इतनी आत्मिक दृष्टि पक्की चाहिए क्योंकि अभी देखो समय प्रति समय कोई न कोई ऐसी घटनायें हो रही हैं। बहनों पर कैसे कैसे अत्याचार हो रहे हैं। न्यूज में आता रहता है ना कि यह हुआ...क्या हुआ? गवर्मेन्ट का पब्लिक मानती तो है नहीं इसीलिए बाबा कहते हैं, समय बहुत खराब आयेगा जो संस्कार होंगे वो बाहर आयेगा। तो आजकल के संस्कार हैं ही क्या? इसके लिए बाबा कहते हैं, ऐसे टाइम पर मैं अशरीरी आत्मा हूं यही दिखाई दे, तो इतना अशरीरीपन का अभ्यास चाहिए, जो उन्हें आत्मा का रूप दिखाई दे, भासना आवे, यह आत्मा बोल रही है, आत्मा दिखाई दे रही है, इतना अभ्यास हमारा पक्का हो। बाबा साक्षात्कार नहीं कहता है लेकिन स्वरूप ऐसा हो जो उनको आत्मा ही दिखाई दे, मस्तक से लाइट दिखाई दे, इतना अभ्यास हो।

धरा पर फ़रिश्ते समान थीं दादीजी ...

ब्र.कु.पुष्पा, दिल्ली

प्यारी दादी जी को मैं बाल्यकाल से ही देखती आ रही थी। यूं तो मैं 9-10 वर्ष की आयु में साकार बाबा और प्यारी मम्मा से मिली, गोद भी ली लेकिन आयु छोटी होने के कारण ख़ास बातें याद नहीं रहीं। दादी जी मुझे हमेशा पुष्प कह कर बुलाती थीं जो मुझे बहुत अच्छा लगता था और अपनेपन की, समीपता की बहुत भासना आती थी। यह पुष्प सम्बोधन मेरे दिल को अन्दर तक छू लेता था। उस समय मुझे दादी का चेहरा नहीं साकार बाबा का ही चेहरा दिखाई दे रहा था जब मैं एम.ए. की पढ़ाई का लास्ट ईयर कर रही थी, मैं आलराउन्डर दादी जी के साथ मधुबन आई थी। दीदी मनमोहिनी जी की हमारे परिवार को रजौरी गार्डन सेन्टर में पालना मिली थी। दीदी मनमोहिनी ने आलराउन्डर दादी के साथ मुझे पाण्डव भवन दिल्ली में सेवार्थ जाने का आदेश दिया। तब आलराउन्डर दादी जी और मैं बड़ी दादी जी से मिली और सुनाया कि ऐसे पाण्डव भवन सेवा में जा रही हूं। तब दादी जी ने बड़े प्यार से छुट्टी दी और बहुत देर दृष्टि देने के बाद बातचीत करते हुए कहा कि यह समझदार है, बहुत गम्भीर है, लायक है। उस समय मुझे दादी का चेहरा नहीं दिखाई दे रहा था। मेरे मुख से भी निकला, ''जी बाबा''। बाल्यकाल में, साकार बाबा ने हमारा हाथ पकड़कर, बड़े प्यार से दृष्टि दी थी। ऐसी अहसास मुझे बाद में भी कई बार दादी जी के द्वारा हुआ। दादी जी के ये शब्द उस समय जैसे वरदान लग रहे थे क्योंकि मैं अपने को इतनी योग्य नहीं समझती थी। सचमुच, तब से इस आत्मा में एक हिम्मत और बल भर गया।

दादी जी छोटे-बड़े सभी को अपनापन और बहुत मान देती थीं दादी जी के अंग-संग के अनेक अनुभव हैं, जिनसे हमने बहुत सीखा और जीवन में आगे बढ़ते रहें। प्यारी दादी जी के बोल, चाल, व्यवहार से कभी लगता ही नहीं था कि दादी स्वयं को चीफ़ समझ रही हैं या वो भान है। दादी जी एक बार विदेश से दिल्ली आयी, तब बड़े ही प्यार से आलराउन्डर दादी जी को गिफ्ट दिया और कहा, यह आप अपनी सन्दल पर बिछाओ। वह बहुत सुन्दर झालर वाला बेड कवर था।

दादी आलराउन्डर ने मुस्कराते हुए मना किया। दादी जी ने उसी क्षण स्वयं उसे खोलकर, अपने हाथों से दादी जी के पलंग पर बिछा दिया, फिर आलराउन्डर दादी जी को भी अपने हाथ से पकड़कर पलंग पर बिठा दिया और कहा, देखो अब अच्छा लग रहा है ना! सचमुच दादी जी सबको इतना अपनापन और मान देती थीं जो सब कुछ एक ही है, एक ही परिवार है, ऐसा दिखाई देता था।

टीचर्स बहनों की मधुबन में भट्ठी थी और दादी जी पाण्डव भवन के मेडिटेशन हॉल में हम सब बहनों को रास करवा रही थीं। थोड़ी ही बहनें थीं, दो-तीन सर्कल बनाए थे। दादी जी जब हमारे सर्कल में आयीं तो मैं दादी के साथ रास करने लगी और दादी जी ने मुझे गले लगा लिया। वह इतनी सुखद अनुभूति और लवलीन अवस्था थी, सब-कुछ जैसे कि भूला हुआ था। अब तक इतने वर्षों बाद भी मैं उसी अनुभूति में खो जाती हूं। दादी जी के नेत्रों से जैसे प्रेम की गंगा बह रही थी।

दादी जी की साधारण से साधारण बात में भी बड़ी ऊँची भावनाएँ समाई होती थीं दादी जी अक्सर सेवा-अर्थ देहली में आती थीं और पाण्डव भवन में रूकती थीं। एक बार जैसे ही हॉल में कार्यक्रम पूरा हुआ दादी जी बरामदे में आकर बैठीं, सभी वापस जा रहे थे। तभी एक परिवार की 5 वर्ष की बच्ची और 3 वर्ष का उसका भाई, बरामदे में आने की कोशिश कर रहे थे। वहाँ दो स्टैप थे चढ़ने के, छोटा बच्चा चढ़ नहीं पा रहा था। बच्ची ने अपने भाई को उठा लिया, पर ठीक से उठा नहीं पा रही थी। जैसे-तैसे उसे छाती से लगाकर स्टैप चढ़कर बरामदे में आ गयी कि कहीं मेरा भाई गिर न जाये। दादी यह सब बड़े ही ध्यान से देख रही थीं। मैं दादी जी के पास ही खड़ी थी। दादी जी ने कहा, पुष्पा, देखा तुमने, कितना प्यार है इसको अपने भाई से। यह है प्यार। जैसे दादी जी के उस कहने में भी गहरी भावनाएँ थीं और बड़े ही राज़ से दादी जी यह सब कह रही थीं। हमने अनुभव किया कि दादी जी की साधारण से साधारण बात में भी बड़ी उँची भावनाएँ, बेहद दृष्टिकोण, विशाल हृदय और शुभ कामनाएँ समाई हुई होती थीं।

दादी जी को मुरली सुनाते हुए मैंने कई बार सफ़ेद-सफ़ेद चमकते फ़रिश्ते के स्वरूप में देखा है। मैं कइयों को सुनाती भी थी कि आज दादी धरती पर फ़रिश्ता रूप थीं।

दिल्ली-पाण्डव भवन। दादी हृदयमोहिनी, प्रसिद्ध क्रिकेटर वीरेन्द्र सहवाग तथा उनकी धर्मपत्नी आरती सहवाग को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए। साथ में हैं ब्र.कु.पुष्पा।

गया-नूर कम्पाउण्ड। बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.शीला।

आणंद -गुजरात। महिला सेमिनार का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.गीता, आशा बहन, प्रमुख जागृति महिला संगठन, डॉ.रागिनी पटेल, प्रो.सीमा शाह।

वैंगलोर-कुमारा पार्क। कर्नाटक के स्वास्थ्य मंत्री दिनेश गुण्डु राव ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु.सरोजा तथा ब्र.कु.अश्वत्थ नारायण।

अलीगढ़। मम्मा के स्मृति दिवस पर ब्र.कु.शीला अपने विचार व्यक्त करते हुए। साथ हैं डॉ.दिव्या गुप्ता, रश्मि गुप्ता तथा डी.आर.गुप्ता।

बनहट्टी -कर्नाटक। समाज कल्याण मंत्री उमाश्री का गुलदस्ता भेंट कर स्वागत करते हुए ब्र.कु.माला व ब्र.कु.गीता। साथ हैं सुरेश चिंदक, मल्लिकार्जुन, लीडिंग मरचैन्ट।

त्रिकालदर्शी थीं दादीजी

ब्र.कु.रानी, मुजफ्फरपुर

दादीजी को त्रिकालदर्शी रूप में देखा, वह दिल की गहराई में उतर जाती थीं -दिल की बातें जान जाती थीं। हमने प्रत्यक्ष रूप में उनके अन्दर यह विशेषता देखी। दादी के पास मैं बैठी थी, दादी लेटी हुई थीं, आँखे बन्द थी, दादी ने कहा– देखो मेरे सामने बाबा खड़ा है। थोड़ी देर के बाद दादी ने कहा– सारे दिन में ऐसा कोई समय नहीं होता जब बाबा मेरे सामने न हो। दादी के यह अनुभव युक्त महावाक्य मेरे दिल में समा गये और मुझे यह समझ में आ गया कि बाप दादा की मूरत सारा दिन नयनों में समाई रह सकती है और हम निरन्तर योगी बन सकते हैं। एक बार दादी से मैं एक रस अवस्था कैसे रहे इस विषय पर बातचीत कर रही थी तो दादी ने कहा– किसी भी राजा को देखो वह अपने ही चिन्तन में, अपने ही मौज में खड़ा दिखाई देता है, वह किसी को इधर-उधर देखता ही नहीं। अगर ऐसे हम रहें तो एक रस अवस्था और चढ़ती कला का अनुभव कर सकते हैं। समर्पित बहनों का दादी बहुत ध्यान रखती थीं। एक स्थान के लिए दादी ने पुछा कि वहां कितनी बहनें समर्पित हैं, मैंने कहा, बारह बहनें, तो दादी ने कहा कि, उनकी खातिर वहां जाओ, उनको ईश्वरीय पालना मिलनी चाहिए। ऐसी मीठी पालना देने वाली, ऐसा ध्यान रखने वाली दादी आज भी सभी के नयनों में समाई हुई हैं

दादीजी तपस्विनी एवं स्थितप्रज्ञा थीं

मैंने दादी से सीखा कि ''निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी भव'' के अन्तिम वरदान का स्वरूप कैसे बना जाए। इस वरदान को दादी जी अमृतवेले से रात्रि तक स्थूल, सूक्ष्म दिनचर्या में प्रयोग में लाने का

कार्य करती थीं। निराकारी स्थिति का आधार पॉवरफुल अमृतवेला, ये उनके जीवन का स्वरूप हो गया था। निर्विकारी स्थिति का आधार मुरली का गहन चिन्तन है। दादी जी प्रतिदिन रात्रि में और अमृतवेले योग के पश्चात् मुरली अवश्य गहराई से पढ़ती थीं और सारे दिन में चाहे पर्सनल मिलें या क्लास कराएं लेकिन उस दिन की मुरली की धारणा, श्रीमत ज़रूर सभी को पक्का कराती थीं। ऐसे श्रीमत और दृढ़ता द्वारा ड्रामा के पट्टे पर अचल-अडोल रह निराकारी, निर्विकारी की स्टेज 95 प्रतिशत तक हो जाने के कारण सभी गुणों एवं शक्तियों में पारंगत हो गईं। यज्ञ के सामने कितनी भी बातें आईं, उनमें भी वह न्यारी-प्यारी रह उनका समाधान स्वयं भी करती थीं और औरों से भी कराती थीं। उदाहरणार्थ, एक सेन्टर से फोन आया कि सेन्टर के मकान को आग लग गई है, सारा जल गया...। लेकिन दादी जी ने एक सेकेण्ड भी चिन्ता नहीं की, न आश्चर्य, न स्तब्धता। तुरन्त कहा, कल्याणकारी ड्रामा...। उसके पश्चात् शक्तिशाली स्थिति और वचनों द्वारा बहनों को समझानी और शक्ति देने लगीं। इस दृश्य को देखकर मुझे लगा कि कई बार एक काँच का गिलास टूटने से लगता है कि क्या हो गया, क्यों टूट गया लेकिन दादी जी की तो कमाल है!

-ब्र.कु.मंजू , ब्रह्मपुर, उड़ीसा

जरी-कुल्लू। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.कमला तथा ब्र.कु.अन्नु।

फतेहगढ़। मम्मा के स्मृति दिवस पर अपने विचार व्यक्त करते हुए मुख्य विकास अधिकारी सुभाष चन्द्र श्रीवास्तव। साथ हैं केन्द्रीय कारागार अधीक्षक यादवेन्द्र शुक्ल, मिथलेश अग्रवाल, ब्रज किशोर व ब्र.कु.सुमन।

बरेली। 'आध्यात्मिकता द्वारा सुरक्षा' कार्यक्रम का दीप प्रज्जवल कर उद्घाटन करते हुए डी.एम.ओ. जवाहर राम, परिवहन निगम प्रबंधक एम.बी.नाथू, ब्र.कु.पार्वती, ब्र.कु.नीता तथा अशोक अग्रवाल।

डिवाई (उ.प्र.)। 'कुण्डली जागृति शिविर' का दीप प्रज्जवलन कर उद्घाटन करते हुए डॉ.प्रेम अग्रवाल, ब्र.कु.कुसुम, ब्र.कु.सीमा व रचना।

फरीदाबाद। सीमा त्रिखा, उपाध्यक्ष महिला मोर्चा भारतीय जनता पार्टी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.कौशल्या।

जम्मू। यातायात एवं परिवहन प्रभाग द्वारा 'आध्यात्मिकता द्वारा सुरक्षा, विषय पर आयोजित सेमिनार का उद्घाटन करने के पश्चात् ग्रुप फोटो में राजेन्द्र सिंह जामवाल,पूर्व मेजर जनरल, ज़हीर अब्बास भट्टी,धर्मनाथ ट्रस्ट, जम्मू एण्ड कश्मीर, ब्र.कु.दिव्या, ब्र.कु.कुन्ती, ब्र.कु.सुदर्शन तथा ब्र.कु.रवीन्द्र।

यातायात एवं परिवहन प्रभाग द्वारा महासम्मेलन का आयोजन

ब्रह्माकुमारीज़ के यातायात एवं परिवहन प्रभाग द्वारा 27 सितंबर से 1 अक्टूबर 2013 तक 'गति, सुरक्षा एवं आध्यात्मिकता 'विषय पर महासम्मेलन एवं मेडिटेशन रिट्रीट का आयोजन किया गया है। जिसमें प्रबंधक, व्यवसायियों, मालिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, चालकों , परिचालकों तथा ट्राफिक पुलिस के प्रतिनिधियों को भाग लेने हेतु आमंत्रित किया गया है। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें।- ब्र.कु. सुरेश,मुख्यालय संयोजक शांतिवन। फोन नं. - 9414153366, 9785358510,

Email - hqoffice.ttw@gmail.com,
transport.travelwing@bkivv.org

कला एवं संस्कृति प्रभाग

ब्रह्माकुमारीज़ के कला-संस्कृति प्रभाग द्वारा 2 सितंबर से 6 सितंबर 2013 तक शांतिवन आबू रोड राजस्थान में **दैवी संस्कृति द्वारा आन्तरिक शान्ति एवं सद्भावना** विषय पर कॉन्फ्रेन्स का आयोजन किया गया हैं। जिसमें कलाकार, संगीतकार, निर्देशक डिज़ाइनर तथा कला जगत् से जुड़े हुए अन्य लोग भाग ले सकते हैं।अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-,

ब्र.कु.दयाल और ब्र.कु.सतीश,फोन नं. 9828699737,9414158745
Email-artandculturewing@gmail.com

रक्षाबंधन के पावन... पेज 2 का शेष...

वास्तव में भारत में युग-युगान्तर से नैतिकता और मर्यादा का वातावरण रहा है। हाँ, कुछ ही शताब्दियों पहले से इसका वातावरण बिगड़ा है, परन्तु यह त्योहार तो (जैसे कि लोग कहते भी हैं) चिरातीत से चला आ रहा है।

क्या यहाँ लोग अपहरण आदि होने देते थे?-भारत के लोग स्वयं भी कहते हैं कि भारत देवभूमि था। यहां पर ऐसे-ऐसे आख्यान घर-घर में पढ़े जाते हैं, जिनमें यह बताया गया है कि एक नारी के चुराए जाने पर चुराने वाले की सारी सत्ता ध्वस्त कर दी गई। ऐसी स्थिति में यह सोचना कि अपनी लाज की रक्षा के लिए ही बहन भाई को हर वर्ष राखी बाँधती थी, गले के नीचे नहीं उतरता। क्या यह कहना गलत है कि तब नारी की लाज सुरक्षित थी? **भाई कभी भी रक्षा का संकल्प व्यक्त क्यों नहीं करता?**- सोचने की बात यह भी है कि यदि बहन, भाई को अपनी लाज अथवा अपनी शारीरिक रक्षा के लिए राखी बाँधती है, ो भाई को कुछ दो शब्द तो इसके उत्तर में कहने ही चाहिए। वह कम से कम इतना तो कह दे कि ''बहन, मैं आज यह दृढ़ संकल्प लेता हूं कि जब तक जान में जान रहेगी, तब तक तेरी आन रहेगी।'' अच्छा न भी कहे, तो उसके चेहरे से ही ऐसा भाव प्रगट हो या कोई भी भाई अपना ऐसा अनुभव बता दे कि ''जब मुझे राखी बांधी जा रही थी, तो मेरे मन में सुरक्षा और वीरता के भाव ठाठें मार रहे थे।'' परन्तु जबकि कोई ऐसी स्थिति ही सामने नहीं होती, माहौल ही ऐसा नहीं होता, तो दानों के मन में कोई रक्षक और रक्षिता के भाव ही नहीं उठते, बल्कि वे तो एक पवित्र स्नेह, एक शुद्ध सम्बन्ध के नाते से मिलते हैं। और बहन की रक्षा करना तो भाई का वैसे भी कर्त्तव्य ही है; इसके लिए उसे राखी बाँधने की क्या आवश्यकता है और हर वर्ष जतलाने, याद दिलाने और फरियाद करने की क्या आवश्यकता है? क्या बहन को भाई के स्नेह और उसके मन में रक्षा की भावना में संदेह है कि हर वर्ष इसके लिए राखी बांधी जाती है? नहीं, क्या इससे यह प्रतीत नहीं होता कि इसके पीछे भाव कुछ और ही है?

बहन के अतिरिक्त ब्राह्मण राखी क्यों बांधते हैं?- फिर, हम यह भी देखते हैं कि बहन के अतिरिक्त ब्राह्मण भी यजमान को राखी बाँधते हैं और बाँधते हुए उसे वह कहते हैं कि –''इन्द्राणी ने भी इन्द्र को राखी बान्धी थी और उससे इन्द्र को विजय प्राप्त हुई थी।'' पुनश्च कुछ लोग इस पर्व को **विषयतोड़क पर्व** भी कहते हैं। अत: यदि यह त्योहार भाई द्वारा बहन की रक्षा के संकल्प का ही प्रतीक होता, तो आज तक ब्राह्मणों द्वारा राखी बाँधने का रिवाज न चला आता? इससे तो यह विदित होता है कि यह त्योहार बहनों को भी ब्राह्मणों का दर्जा देकर और भाई को यजमान की तरह से राखी बाँधने का प्रतीक है, क्योंकि दोनों द्वारा राखी बन्धाये जाने की रीति भी समान ही है।

अपेक्षा पूरी न हो तो दु:खी नहीं होना

प्रश्न :- अपेक्षा ही नहीं रखें, ये कैसे सम्भव है ? अगर हम बच्चे के साथ उम्मीद नहीं रखें कि वह हमारा सम्मान किया करे, तो यह भी एक प्रकार से अपेक्षा ही है।

उत्तर :- अच्छा, इसको थोड़ा सा बदल लेते हैं। क्योंकि आपने कहा कि अपेक्षा रखना स्वाभाविक है तो क्या हम अलग अपेक्षा रख सकते हैं। यदि मेरी अपेक्षा पूरी नहीं हुई तो हम दु:खी तो नहीं हो जायेंगे। सारा दिन यह तो कर सकते हैं या नहीं कर सकते। नहीं तो हम फिर ऐसे-वैसे होते रहेंगे। अगर हमें अपनी जीवन को अच्छा बनना है तो हमें मुक्ति की मान्यता रखनी ही होगी ।

प्रश्न :- मेरे पति इतने दिन से मुझसे प्यार से बातें करते आये और अचानक उन्होंने मुझे डांट दिया तो क्या हम इससे परेशान नहीं होंगे ?

उत्तर :- हाँ। वो तो हो सकता है, क्योंकि जैसे ही आप वो करोगे तब हो सकता है कि आपकी अपेक्षा फिर से पूरी भी हो जायेंगी। आपकी स्थिरता से वो भी जल्दी से ठीक होकर आपके पास वापस आ जायेंगे। मैं आपसे यह अपेक्षा करती हूँ कि जो मुझे चाहिए आप भी अपनी जीवन को वैसा ही बनाओ। अब इसमें क्या होता है कि हम लोगों की अपेक्षाओं को पूरा करने की कोशिश में कहीं न कहीं हम अंदर से बहुत परेशान होने लगते हैं। और फिर हम ये बोलने भी लगते हैं कि मैं उनके लिए ये कर रहा हूँ, आप कल्पना करो कि क्या हमारा जीवन ऐसा है! मैं उनके लिए ये कर रहा हूँ, नहीं। अगर किसी के कहने पर आप कुछ कर भी रहे हैं तो ये बोलने में तो अच्छा लगता है कि इसीलिए मैं ये कर रहा हूँ। क्योंकि अगर मैं आपके लिए कर रहा हूँ और फिर यदि आप मेरे से खुश नहीं हुए तो आपको पता है इसके बाद मैं स्वयं को कितना अपमानित महसूस करने वाली हूँ।

-ब्र.कु.शिवानी

प्रश्न :- यदि मैं आपकी अपेक्षाओं को पूरा करने की कोशिश करती हूँ, तो मुझे पता होना चाहिए कि आप मुझसे क्या चाहते हैं।

उत्तर :- यदि मैं आपकी अपेक्षाओं को पूरा करता हूँ तो सबसे पहले आपको उनको अपनी अपेक्षा बतानी पड़ेगी। मान लो पैरेंट अपने बच्चे से कुछ अपेक्षा कर रहा है तो बच्चा ये सोच-सोच कर करेगा कि मैं उनके लिए कर रहा हूँ.... मैं उनके लिए कर रहा हूँ, तो इससे सकारात्मक उर्जा प्रवाहित नहीं होती है। अगर बच्चे को पालक की वो बात अच्छी लग रही है, समझ में आ गयी है, उसने उसे स्वीकार कर लिया है कि अब मैं इसे अपने लिए कर रहा हूँ आपके लिए नहीं तो इससे उद्देश्य ही बदल जाता है।

प्रश्न :- मान लो बच्चे का मन किसी कार्य को करने का है, लेकिन पालक ने माना कर दिया तो क्या बच्चा मान जायेगा ? ठीक है वो बहुत दर्द में चले जायेंगे, उनके लिए बहुत मुश्किल हो जायेगा, ये हो जायेगा, उसे नहीं पता था लेकिन वह पिता की बात को स्वीकार कर लेता है, क्योंकि वह ऐसा देखने में सक्षम नहीं होता है।

उत्तर :- नहीं, वो करने से पहले उसको अपने साथ बैठाकर समझाना पड़ेगा। दोनों में से एक तरफ निर्णय करने से पहले या तो उनके साथ अपनी बात साझा करके आप खत्म कर लो। लेकिन अगर आप उनकी बात को स्वीकार कर रहे हो, आप उसको तब तक नहीं करो जब तक आपने उसको अपना नहीं बनाया। आपने कहा कि इससे माता-पिता बहुत दु:खी हो जायेंगे कि मैंने आपके लिए किया। लेकिन मुझे अपने आपको कहना पड़ेगा, समझाना पड़ेगा कि मेरे लिए यह बहुत जरूरी है कि ये खुश रहे। लेकिन अगर मैंने उसको खुश होकर अपने लिए किया तो फिर उसकी सारी जिम्मेवारी, उसमें जितना मेहनत लगेगा वो हम खुश होकर करेंगे। ये है खुश रहकर कर्म करना।

लेकिन अब मैं अपने लिए ये कर रहा हूँ। मैंने किया क्योंकि मुझे पता था ये करने से मेरे माता-पिता को खुशी मिलेगी। लेकिन ये विचार तो मेरे साथ ही रहा कि इसमें मेरे माता-पिता की खुशी थी और इसीलिए मैंने इसे किया। लेकिन जब मेरी पसंद ही मातपिता की पसंद हो जाए तो हर कार्य हमारी पसंद का हो जाता है और फिर मुझे अपनी पसंद का कार्य करने की जो खुशी होगी वह अधिक सकारात्मक होगी। अगर मैं उनकी अपेक्षाओं के लिए करता हूँ तो कम सकारात्मकता होगी। क्रमश:

रक्षाबंधन और संकल्प

मानव स्वभाव से ही स्वतन्त्रता प्रेमी है। अत: मनुष्य जिस बात को बन्धन समझता है, वह उससे छूटने का प्रयत्न करता है। परन्तु 'रक्षा बन्धन' को बहनें और भाई, त्योहार अथवा उत्सव समझकर खुशी से मनाते हैं। यह एक न्यारा और प्यारा बंधन है।

बंधन दो प्रकार के होते हैं – एक तो ईश्वरीय और दूसरे साँसारिक अर्थात् कर्मों के बन्धन। ईश्वरीय बन्धन से मनुष्य को सुख मिलता है परन्तु दूसरे प्रकार के बन्धन से दु:ख की प्राप्ति होती है। रक्षाबंधन ईश्वरीय बन्धन, आध्यात्मिक बन्धन अथवा धार्मिक है। विचारवान् मनुष्य ईश्वरीय बन्धन में तो बँधना चाहते हैं परन्तु माया के बँधन से मुक्त होना चाहते हैं। रक्षाबन्धन उन्हें अप्रिय नहीं लगता। परन्तु आज लोगों ने इसे एक लौकिक रस्म ही बना दिया है। इसी कारण, यह भी बन्धन भासने लगा है। जैसे आध्यात्मिकता और धर्म-कर्म के क्षीण हो जाने के कारण संसार की वस्तुओं से अब सत् अथवा सार निकल गया है वैसे ही आध्यात्मिकता को निकाल देने से इस त्योहार से भी सत् अथवा सार निकल गया है वरना यह त्योहार बहुत ही महत्वपूर्ण और उच्च कोटि का त्योहार है।

बहनें, भाइयों से किस प्रकार की रक्षा चाहती हैं?

भारत देश अपनी फ़िलॉसफ़ी के लिए प्रसिद्ध है, अब आप देखेंगे कि इन त्योहारों के पीछे भी एक बहुत बड़ी फ़िलॉसफ़ी अथवा ज्ञान है। रक्षाबंधन के गूढ़ रहस्य को समझने के लिए पहले यह जानने की आवश्यकता है कि मनुष्य की सब प्रकार की रक्षा कैसे और किस द्वारा हो सकती है? और बहनें अपने भाइयों से किस प्रकार की रक्षा चाहती है? विचार करने पर आप इस निर्णय पर पहुचेंगे कि प्रत्येक मनुष्य पांच प्रकार की रक्षा चाहता है। तन की रक्षा, धर्म, सतीत्व अथवा पवित्रता की रक्षा, काल से और माया के विघ्नों से रक्षा। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या कोई मनुष्य इन पाँचों प्रकर की रक्षा करने में समर्थ है भी?

सर्वप्रथम तन की रक्षा पर ही विचार कर लीजिए। तन की रक्षा के लिए मनुष्य अनेक कोशिशें करता है परन्तु अन्त में उसे यही कहना पड़ता है कि जिसकी मौत आई हो उसे कोई नहीं बचा सकता अर्थात् ''भावी टालने से नहीं टलती।'' इस सिद्धान्त की पुष्टि के लिए अनेक वास्तविक वृत्तान्त प्रसिद्ध हैं।

दूसरी प्रकार की रक्षा है – धर्म की, पवित्रता की अथवा सतीत्व की रक्षा। दुष्टों से पवित्रता की रक्षा भी वास्तव में सर्वसमर्थ परमपिता परमात्मा ही कर सकते हैं। इसलिए आख्यान प्रसिद्ध है कि कौरवों की भरी सभा में जब द्रौपदी का चीर हरण होने लगा तो द्रोपदी ने अंत में भगवान ही को पुकारा था क्योंकि कोई भी सम्बन्धी उनकी रक्षा न कर सका था। इसलिए ऐसी आपदा के समय लोग भगवान् ही को सम्बोधित करके कहते हैं –'हे प्रभु, हमारी लाज रखो, हमारे धर्म की रक्षा करो, भगवान्!' अत: निस्संदेह भगवान् ही हैं जो माताओं-बहनों के 'चीर बढ़ाते' हैं अर्थात् उनके सतीत्व और धर्म की रक्षा करते हैं। इसी कारण दु:ख के समय मनुष्य के मुख से ये शब्द निकलते हैं – ''हे प्रभु, मुझे सहारा दो।''

तीसरी प्रकार की रक्षा है – काल के पंजे से रक्षा। मनुष्य तो स्वयं भी कालाधीन हैं। बड़े-बड़े योद्धाओं को भी आखिर काल खा जाता है। सिकन्दर का भी उदाहरण हमारे सामने है। उसने अनेकानेक सैनिकों को मारा और मरवाया परन्तु स्वयं को काल से नहीं बचा सका। निश्चय ही काल के पंजे से छुड़ाने वाले भी एक परमात्मा ही हैं जिन्हें 'कालों का काल', 'महाकाल', 'महाकालेश्वर' (शिव), 'अमरनाथ' अथवा 'प्राणनाथ', भी कहा जाता है। अत: काल से बचने के लिए मनुष्य मृत्युन्जय का पाठ करते हैं अर्थात् परमात्मा शिव ही की शरण में जाने की कामना करते हैं। जन-श्रुति है कि जिस मनुष्य ने अच्छे कर्म किए होते हैं, उनकी मृत्यु होने पर जब यमदूत आते हैं तो भगवान् के पार्षद उन यमदूतों को भगा देते हैं। तो वास्तव में परमात्मा की रक्षा मिलने से ही मनुष्य यमदूतों से बच सकते हैं और मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। परमात्मा ही अजेय हैं और उन्हीं की महिमा में संसार यह गायन करता है कि '' जाको राखे साइयाँ, मार सके न कोय। बाल न बाँका कर सके, चाहे सब जग बैरी होय।''

रक्षाबंधन है स्वयं से प्रतिज्ञा करने का पर्व - न भयभीत होंगे न भय फैलायेंगे,स्वयं को श्रेष्ठ कर्म से सुरक्षित रखेंगें और इस शक्ति से आसपास में सुरक्षित वायुमण्डल बनाएंगे व शांति, सद्भाव से सबके जीवन को खुशियों से महकायेंगे।

चौथे प्रकार की रक्षा – सांसारिक आपदाओं अथवा लौकिक संकटों से रक्षा। सदा के लिए दु:खों अथवा संकटों से भी एक परमात्मा ही रक्षा दे सकता है; कोई भी मनुष्यात्मा यह कार्य नहीं कर सकती। **परमात्मा को ही 'संकट मोचन', 'दु:ख भंजन' और 'सुख दाता' कहते हैं।** परमात्मा ही काल और कंटक दूर करने वाले हैं। उन्हें ही 'हरि' अथवा 'हरा' अर्थात् ''दु:ख एवं संकट हरने वाला'' माना जाता है। प्रकृति तो उनकी दासी ही है।

माया के बन्धन से भी परमात्मा ही छुड़ाते हैं, तभी तो मनुष्य परमपिता को पुकार कर कहते हैं–''विषय-विकार मिटाओ पाप हरो देवा।'' गज और ग्राह का जो प्रसंग प्रसिद्ध है, वह भी इसी रहस्य को स्पष्ट करता है कि जब ग्राह गज को निगलने वाला था तो भगवान् ही ने ऐसे समय उसकी रक्षा की। फूल तोड़कर अपनी सूँड़ उपर की तो भगवान् ने यह देखकर कि वह पुष्प चढ़ा रहा है अर्थात् याद कर रहा है, उसकी रक्षा का संकल्प किया। वास्तव में आध्यात्मिक अर्थ में ज्ञानी मनुष्य ही गज हैं, माया ही एक ग्राह है, यह संसार एक सागर है और कमलरूपी पुष्प अलिप्त जीवन का सूचक है। अत: आख्यान का भाव यह है कि माया के आघातों से भगवान् ही ज्ञानवान् मनुष्यों की रक्षा करते हैं। ज्ञान ही स्वदर्शन चक्र है जिससे माया का गला कट जाता है और परमात्मा ही सभी के रक्षक हैं। इसी कारण गीता में यह वाक्य हैं कि साधुओं का भी परित्राण करने वाले परमात्मा ही हैं।

बहनें रक्षाबंधन क्यों बाँधती हैं?

अब प्रश्न उठता है कि यदि परमात्मा ही पाँचों प्रकार की रक्षा करते हैं तो बहनें, भाइयों को रक्षाबंधन क्यों बाँधती हैं अथवा ब्राह्मण भी रक्षाबंधन क्यों बाँधते हैं? इस बात को समझने के लिए, आपको यह जानना चाहिए कि इस पर्व को 'विष तोड़क पर्व' अथवा 'पुण्य प्रदायक पर्व' भी कहा जाता है। इन नामों से सिद्ध है कि यह बन्धन विषय-विकारों को छोड़ने और पुण्यात्मा बनने के लिए है। अत: 'रक्षाबन्धन' पवित्रता अथवा धर्म की रक्षा करने का बन्धन है।

आप जानते हैं कि बहन और भाई का सम्बन्ध बहुत पवित्र होता है। अत: बहनों का भाइयों को बन्धन बाँधने का अर्थ भी यही होता है कि भाई यह व्रत लें कि वे पवित्रता को धारण करेंगे तथा अपनी दृष्टि, वृत्ति और कृति को पवित्र बनायेंगे अथवा मन, वचन और कर्म से पवित्र रहकर सभी नारियों से अपनी बहन के समान बर्ताव करेंगे। ब्राह्मणों के द्वारा रक्षाबंधन बँधवाने का अर्थ भी यही है।

प्राचीन काल में सच्चे ब्राह्मण पवित्र रहकर दूसरों को पवित्र रहने की प्रेरणा (शिक्षा) देते थे। अत: इस दिन वह बन्धन बाँधते हैं तकि प्रत्येक मनुष्य पवित्रता का व्रत ले। परन्तु आज न तो बहनें ही इस मनसा से 'रक्षाबंधन' बाँधती हैं और न ब्राह्मण ही। आज मनुष्य इस आध्यात्मिक रहस्य को भूल गया है और वह इस महान् पर्व को एक रीति-रिवाज की तरह ही मानता है। इसलिए, आज यह पर्व 'विष तोड़क ' अथवा 'पुण्य प्रदायक' पर्व के रूप में नहीं रहा और व्यक्ति अथवा समाज को इससे वह प्राप्ति नहीं होती जो इसे यथार्थ रूप में मानने से हो सकती है। पावन पर्व पर संकल्प करें -

स्वयं से प्रतिज्ञा करने का पर्व- न भयभीत होगे न भय फेलायेंगे,स्वयं के श्रेष्ठ कर्म से सुरक्षित रखेंगें और इस शक्ति से आसपास में सुरक्षित वायुमण्डल बनायेंगें,शांति व सद्भाव से माहौल बनाएंगे।

शांतिवन। हरित राजस्थान कार्यक्रम के अंतर्गत करते हुए वृक्षारोपण करते हुए दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु.मृत्युंजय, ब्र.कु.भरत, ब्र.कु.ओम, ब्र.कु.दिलीप तथा ब्र.कु.भानु।

सोनीपत। विधायक कृष्ण मोद को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रमोद, ब्र.कु.सुनिता तथा ब्र.कु.कमल।

मऊ (उ.प्र.)। जिला अधिकारी कुमुदलता श्रीवास्तव से आध्यात्मिक चर्चा करने के पश्चात ब्र.कु.विमला और ब्र.कु.गोमा।

आसन्द। 'क्लीन दि माइन्ड ग्रीन दि अर्थ' कार्यक्रम के अन्तर्गत ब्र.कु.मेहरचन्द, ब्र.कु.मदनलाल, ब्र.कु.डॉ.सीमा तथा नवदीप सिंह हुड्डा, फॉरेस्ट कन्ज़रवेटर वृक्षारोपण करते हुए।

अहमदाबाद। होमगार्ड मुख्यालय में जवानों को ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु.नंदिनी। साथ हैं ट्राफिक डीएसपी चौधरी, देवेन्द्र पटेल पी.एस.आई. तथा ब्र.कु.नंदा।

चन्द्रपुर। एच.पी.गैस विभाग के प्रांगण में वृक्षारोपण करते हुए ब्र.कु.दीपक। तथा अधिकारीगण।

इन्दौर। रोटरी इंटरनेशनल के डिस्ट्रिक्ट गवर्नर लोकेन्द्र पापालाल, ब्र.कु.ओमप्रकाश को पिन लगाकर रोटरी की सदस्यता प्रदान करते हुए।

रायगढ़ -छ.ग.। नवनिर्मित राजयोग केन्द्र का दीप प्रज्जवलन कर उद्घाटन करते हुए छ.ग. के स्वास्थ्य एवं नगरीय प्रशासन मंत्री अमर अग्रवाल, ब्र.कु. कमला, नगरनिगम के अध्यक्ष जेदूराम मनह व ब्र.कु.हेमा।

लुधियाना। डायबिटिक कार्यक्रम में ग्लोबल अस्पताल माउण्टआबू के डॉ.श्रीमंत साहू, ब्र.कु.राज तथा अन्य।

नगर-भरतपुर। ब्र.कु.कविता कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए। साथ हैं ब्र.कु.हीरा, थानाधिकारी रामकुमार जी, नगरपालिका अध्यक्ष रमन लाल सैनी, उप-कलेक्टर अब्दुल जब्बा, अधिकारी लक्ष्मीनारायण तथा अन्य।

करजन-गुजरात। 'सद्भावना कुटीर' का उद्घाटन करते हुए छत्रिय समाज के प्रमुख भारत सिंह, शांतिवन से पधारी ब्र.कु.गीता, ब्र.कु.तृप्ति, ब.कु.डॉ.निरंजना, ब्र.कु.दीपिका, ब्र.कु.शीतल तथा अन्य।

गाजियाबाद। 'छुट्टियों के रंग बच्चों के संग' समर कैम्प के समापन सत्र में वी.के.सक्सेना,रजिस्ट्रार आई.टी.एस, ब्र.कु.दीपा तथा बच्चे अपने सर्टिफिकेट के साथ।

तुम अकेले नहीं हो

बच्चों का फुटबाल मैच चल रहा था। दोनों ही टीमों में पांच-सात साल के बच्चे थे। नन्हें खिलाड़ी गोल करने और रोकने के लिए पूरा दम लगाए हुए थे, लेकिन मैच का पहला हाफ गोल रहित बराबरी पर छूटा। इस बीच मध्यांतर में दूसरी टीम के प्रशिक्षक ने अपने खिलाड़ियों को कुछ टिप्स दिये। इसके बाद तो मैच की दिशा ही बदल गई। दूसरी टीम बढ़-चढ़ कर हमले करने लगी और पहली टीम के खिलाड़ियों का सारा जोर सिर्फ बचाव तक सिमट गया। लेकिन बचाव कब तक कारगर होता? आखिर दूसरी टीम ने एक गोल ठोक ही दिया।

पहली टीम के नन्हे गोली के चेहरे पर निराशा की लहर दौड गई। लोग उसका उत्साह बढ़ाने के लिए चिल्ला रहे थे। दर्शकों में एक पति-पत्नी ऐसे भी थे, जिनके चीखने-चिल्लाने के अंदाज से साफ लग रहा था कि वे पिछड़ रही टीम के गोली के माता-पिता हैं। वे दोनों लगातार अपने बेटे को जोश दिलाए जा रहे थे। उधर बढ़त लेने के बाद विरोधी टीम के हमले और तेज हो गए। हमारा छुटकू गोली गोल बचाने के लिए सब कुछ कर रहा था, वह उछलता, कूदता, दौड़ता, भागता। लेकिन अफसोस! सब बेकार। सामने वाली टीम ने दूसरा गोल भी दाग दिया। गोली के चेहरे पर निराशा और गहरी हो गई। आखिर वह था तो पांच साल का बच्चा ही। उसके पिता की आवाज और तेज हो गई। वे अपने बेटे को हौसला बंधा रहे थे। इस बीच दूसरी टीम ने तीसरा गोल भी कर दिया। अब तो लगा कि बेचारा गोली रो पड़ेगा। खेल अभी जारी था, लेकिन उसके हाव-भाव से लग रहा था कि वह बिल्कुल हताश हो चुका है। उसने चारों तरफ देखा, लगा कि दुनिया उस पर हंस रही है। वह पराजय की गहरी निराशा के बीच खुद को एकदम अकेला महसूस कर रहा था। अब उसके शरीर में फुर्ती नहीं थी। उसके मां-बाप को समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए। हालांकि नन्हा गोली अभी भी मैदान में डटा हुआ था। उसने हौसला खो दिया था, लेकिन मैदान नहीं छोड़ा था। अचानक दर्शक दीर्घा में बैठे उसके पिता अपनी जगह पर खड़े हो गए। पत्नी ने उन्हें रोकना चाहा, लेकिन वे नहीं रूके और मैदान की ओर बढ़ने लगे। गोल पोस्ट पर पहुंचकर उन्होने अपने बेटे को गले से लगा लिया। पुत्र की आंखों में आंसू थे।

पिता बोले, 'मुझे तुम पर गर्व है, मेरे बच्चे! मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।' पुत्र की आंखों में आंसू के साथ सवाल भी तैर रहे थे। गर्व? हारे हुए बच्चे के लिए गर्व? पिता फिर बोले, हाँ मेरे बच्चे, मुझे तुम पर गर्व है। तुम भले ही तीन गोल खा चुके हो, लेकिन मुझे गर्व है कि तमाम कठिनाइयों के बावजूद तुमने मैदान नहीं छोड़ा।' खेल जारी रहा। इसके बाद दूसरी टीम ने दो गोल और ठोक दिए। लेकिन उससे क्या फर्क पड़ता है?

कथा सरिता

जीवन का अर्थ

एक साधु सांसारिकता से कोसों दूर भगवान के ध्यान में डूबा रहता। अपने आश्रम में आने वालों का सत्कार करता और जाने वालों के प्रति कोई मोह नहीं दर्शाता। कोई आ जाता तो भी वह प्रसन्न रहता और अकेलापन भी उसे नहीं खलता था। साधु सभी स्थितियों को ईश्वर की देन मानकर सुखी रहता था। एक दिन उसके आश्रम में तीन युवक आये। वे कुछ दिन वहां रहना चाहते थे। उनका इरादा जान साधु ने उनसे प्रश्न किया -तुम यहां क्यों आए हो? पहले ने कहा -बस रहने आया हूँ। साधु बोला -रहने में तो कोई परेशानी नहीं है। दूसरे का उत्तर था -कुछ जानने आया हूँ। साधु ने समझाया -कुछ जानने के लिए बुद्धि को शुद्ध और मन को समर्पण योग्य बनाना पड़ेगा। जिसे हम जानना कहते हैं, अधिकांश अवसरों पर वह मात्र जानकारी होती है। यह हमारा भ्रम होता है कि हमने जान लिया। चित्त को एकाग्र किए बिना जो जाना जाए, वह परमात्मा न होकर हमारा अहंकार या पूर्वाग्रह होता है। इससे ऊपर उठकर ही हम परमात्मा को देख सकते हैं। आश्रम में रहो या दुनिया में, चित्त की एकाग्रता और मन के समर्पण के बिना कुछ नहीं जान सकोगे। फिर साधु ने तीसरे युवक की ओर प्रश्न सूचक दृष्टि से देखा, तो वह बोला -मैं जीने के लिए यहां रहने आया हूँ। तब साधु ने कहा -रहना और जानना इन दोनों से ऊपर की स्थिति है -जीना। जीवन बिताना सरल है, किन्तु जीना कठिन है। जीवन को जीने के लिए परमात्मा की अनुभूति होना, उससे एकलय होना आवश्यक है। तीनों युवक साधु की बातों का मर्म जान गए और उनकी बताई राह पर चल पड़े।

हँसी का राज

एक इंसान हमेशा प्रसन्नचित्त रहता था। लोगों ने उससे पूछा, 'तुम्हारी हँसी का राज क्या है? उसने बताया, 'जब मेरी माँ मृत्युशैया पर थी तब उन्होंने जाते-जाते मुझे एक समझ दी थी। उस समझ की बदौलत ही मैं हमेशा खुश रहता हूँ।'

लोगों ने उससे पूछा, 'माँ ने तुम्हें कौन सी समझ दी, जिससे तुम हमेशा हँसते रहते हो?' उसने कहा, 'माँ ने मुझे बताया कि बेटा, जीवन में कभी भी व्यक्ति, वातावरण या व्यापार में बदलाव की वजह से यदि तुम्हारी हँसी बंद हो जाए तो समझना तुम उससे (समय से) हार गए।' उसने माँ की यह सीख गांठ बांध ली अब वह इंसान जीवन में किसी भी परिस्थिति से कभी भी हारना नहीं चाहता था। अगर उसकी कोई प्यारी वस्तु टूट भी जाती तो उसकी हँसी बरकरार रहती यानी वह इंसान वहाँ भी नहीं बदला, कभी भी हार से नहीं हारा। हँसी का अर्थ सिर्फ बाहर से हँसना नहीं है बल्कि भीतर से, हृदय से हँसना है। अगर आपकी भीतर की हँसी बंद हो जाए तो समझ लीजिए कि आप हार गए। इसी एक समझ से वह इंसान पूरा जीवन हँसते हुए जीता है। ऐसे इंसान ने जीवन में हँसना सीख लिया यानी समझ लीजिए जीतना सीख लिया। इसी हँसी को 'विवेक की हँसी' कहा गया है। विवेक का अर्थ है जो सत्य-असत्य के बीच फर्क जानता है, यह समझता है कि सच्चा और झूठा हास्य क्या है।

श्रेष्ठ व्यक्तित्व

दक्षिण भारत में एक बड़े ही ज्ञानी और तपस्वी साधु हुए हैं -सदाशिव ब्रह्मेन्द्र स्वामी। उन दिनों वे अपने गुरूदेव के आश्रम में वेदांत का अध्ययन कर रहे थे। उनका सारा समय अध्ययन-चिन्तन एवं तप में बीतता था। इन्हीं दिनों परम विद्वान सुविख्यात पंडित उनके गुरूदेव के आश्रम में पधारे। इन पंडित महाशय का आते ही किसी बात पर सदाशिव स्वामी से विवाद हो गया। सदाशिव स्वामी ने देखते-ही-देखते उन पंडित महाशय के तर्कों को तहस-नहस कर डाला। सदाशिव स्वामी की प्रचंड विद्वता की आँधी में उन परम विद्वान महोदय की एक न चली। स्थिति यहाँ तक आई कि उन आगंतुक पंडित को सदाशिव स्वामी से क्षमायाचना करनी पड़ी।

इस घटना ने सदाशिव स्वामी को पुलकित कर दिया। उन्होने बड़े ही उत्साहपूर्वक अपने गुरूदेव को यह घटना सुनाई। सोचा था कि गुरूदेव प्रसन्न होकर उनकी पीठ थपथपायेंगे, पर ऐसा कुछ नहीं हुआ, बल्कि इसका ठीक उलटा हुआ। गुरूदेव ने सदाशिव स्वामी को कड़ी फटकार लगाई। वे बोले, ''सदाशिव, श्रेष्ठ चिन्तन की सार्थकता तभी है, जब उससे श्रेष्ठ चरित्र बने और श्रेष्ठ चरित्र तभी सार्थक है, जब वह श्रेष्ठ व्यवहार बनकर प्रकट हो। तुमने वेदांत का चिन्तन तो किया, पर ज्ञाननिष्ठ साधक का चरित्र नहीं गढ़ सके और न ही तुम ज्ञाननिष्ठ साधक का व्यवहार करने में समर्थ हो पाए। इसलिए तुम्हारे अब तक के सारे अध्ययन-चिन्तन को बस, धिक्कार योग्य ही माना जा सकता है।

गुरूदेव के इन वचनों को सुनकर सदाशिव स्वामी का अहंभाव चूर-चूर हो गया। उन्होने बड़े ही विनम्र भाव से पूछा, ''हे गुरूदेव! हम श्रेष्ठ व्यक्तित्व को किस भांति गढ़ें?'' उत्तर में गुरूदेव बोले, ''वत्स! व्यक्तित्व को नये सिरे से गढ़ने के लिए पहले अपने विचारों में उसकी रूपरेखा स्पष्ट होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, ज्ञाननिष्ठ साधक के व्यक्तित्व के गठन के लिए साधक के चिन्तन में हर पल उसकी ज्ञान-साधना घुली-मिली रहे। इस क्रम में दूसरी महत्वपूर्ण बात है कि उद्देश्य के अनुरूप चिन्तन के अलावा कोई भी दूसरा विरोधी विचार या चिन्तन-कण मन में प्रवेश न करने पाए। तीसरा तथ्य यह है कि उद्देश्यपूर्ण विचार की प्रगाढ़ता निरंतर बनी रहे। मनन और नित्यासन निरंतर होता रहे।

ध्यान रहे, चिन्तन स्वयं के चरित्र को विनिर्मित करने के लिए होता है, न कि दूसरे को तर्क से पराजित करके स्वयं के अहं की तुष्टि के लिए। तर्क-कुतर्क करने वाले का चिंतन कभी भी तदनुरूप चरित्र का निर्माण नहीं कर पाता है। इसके विपरीत यदि कुतर्क से बचा जाए तो एक सर्वथा नया चरित्र गढ़ा जाता है।

ऐसा चरित्र जो शरीर एवं इंद्रियों के गुण-धर्म को भी पवित्र एवं प्रकाशित कर देता है। व्यवहार पूर्णत: निष्कपट व निर्मल होना चाहिए। फिर भले ही इसके लिए कितने ही कष्ट एवं संकटों का सामना करना पड़े। सहन करना पड़े।

व्यवहार से ही मनुष्य के व्यक्तित्व की गहरी परतें अभिव्यक्त होती हैं। इसे सर्वथा अपनी जीवन साधना की मर्यादा एवं गरिमा के अनुरूप होना चाहिए।

श्रीकृष्ण का अनोखा जन्म और विलक्षण जीवन

आजकल नेताओं तथा 'महात्माओं' के जन्मदिन मनाने का काफ़ी रिवाज़ है। आये दिन भारत में कभी विवेकानन्द जयन्ती, कभी महावीर जयन्ती, कभी गांधी जयन्ती, कभी तिलक जयन्ती, कभी राष्ट्रपति जी का जन्मदिन और कभी नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जन्म दिन मनाया जाता है। इन व्यक्तियों और जयन्तियों पर आप विचार करेंगे तो देखेंगे कि **इनमें से कई व्यक्ति तो केवल राजनीति ही के क्षेत्र में प्रतिभाशाली माने गये हैं और अन्य कई केवल धार्मिक क्षेत्र में। दोनों क्षेत्रों में समान रूप से किसी का प्रभुत्व रहा हो, ऐसा शायद कोई भी व्यक्ति नहीं मिलेगा। मिल भी जाये तो भी वह पूज्य कोटि का नहीं होगा।** परन्तु श्रीकृष्ण, जिनका जन्मदिन भारतवासी हर वर्ष 'श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव' नाम से मनाते हैं, के जीवन में आपको यही विलक्षणता स्पष्ट रूप से मिलेगी। श्रीकृष्ण निर्विवाद रूप से एक अत्यन्त महान् **धार्मिक व्यक्ति भी थे** और उन्हें **राजनीतिक पदवी**, प्रशासनिक कुशलता भी खूब प्राप्त थी। अत: श्रीकृष्ण अपने चित्रों तथा मन्दिरों में सदैव **प्रभामण्डल** (प्रकाश के ताज) से सुशोभित तथा रत्न-जड़ित स्वर्णमुकुट से भी सुसज्जित दिखाई देते हैं। इसलिए मालूम रहे कि श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव हमें धार्मिक और राजनीतिक दानों सत्ताओं की पराकाष्ठा को प्राप्त श्रीकृष्ण देवता की याद दिलाता है। आज जिन राजनीतिक नेताओं का जन्म-दिन मनाया जाता है, वे प्राय: रत्न-जड़ित स्वर्णमुकुट से सज्जित नहीं हैं; वे 'महाराजाधिराज-श्री' **(His Exalted Highness)** की उपाधि से तथा 'पवित्र-श्री' **(Holiness)** की उपाधि से अर्थात् दोनों उपाधियों से युक्त नहीं हैं। अत: श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव इस दृष्टिकोण से अनुपमेय है क्योंकि **श्रीकृष्ण को तो भारत के राजा भी पूजते हैं और महात्मा भी महान् एवं पूज्य मानते हैं।**

श्रीकृष्ण जन्म ही से महान् थे

इस प्रसंग में ध्यान देने योग्य एक बात यह भी है कि दूसरे जो प्रसिद्ध व्यक्ति हुए हैं कि जिनके जन्म-दिन एक सार्वजनिक उत्सव बन गये हैं, वे कोई जन्म ही से पूज्य या महान् नहीं थे। उदाहरण के तौर पर विवेकानन्द **सन्यास के बाद** ही महान् माने गये। महात्मा गाँधी **प्रौढ़ अवस्था** में ही एक राजनीतिक नेता अथवा एक सन्त के रूप में प्रसिद्ध हुए। यही बात तुलसी, कबीर, दयानन्द, वर्द्धमान महावीर आदि-आदि के बारे में भी कही जा सकती है। परन्तु श्रीकृष्ण की यह विशेषता है कि उनके जन्म के समय भी उनकी माता को विष्णु चतुर्भुज का साक्षात्कार हुआ और **वे जन्म ही से पूज्य पदवी को प्राप्त थे।** आप उनके किशोरावस्था के चित्रों में भी उन्हें दोनों ताजों से सुशोभित देखते होंगे। उन की बालयावस्था के जो चित्र मिलते हैं, उनमें भी वे मोर पंख, मणिजड़ित आभूषण तथा प्रभामण्डल से युक्त देखे जाते हैं। आज भी जन्माष्टमी के दिन भारत की माताएँ पालने या पंगूरे में श्रीकृष्ण की किशोरावस्था की मूर्ति या किसी चेतन प्रतिनिधि रूप में बालक को लिटाकर उसे बहुत भावना से झुलाती हैं। आज भी श्रीकृष्ण की बाल्यावस्था की झांकियाँ लोग बहुत चाव और सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। अन्य किसी भी प्रसिद्ध व्यक्ति को इस प्रकार जन्म ही से प्रभामण्डल से युक्त चित्रित नहीं किया जाता। **श्रीकृष्ण 16 कला सम्पूर्ण और सुन्दर थे** - यह भी एक सत्य तथ्य है कि अन्य जिन व्यक्तियों की जयन्तियाँ मनाई जाती हैं, वे 16 कला सम्पूर्ण नहीं थे। **केवल श्रीकृष्ण ही सोलह कला सम्पूर्ण देव हुए हैं।** श्रीकृष्ण में शारीरिक आरोग्यता और सुन्दरता की, आत्मिक बल और पवित्रता की तथा गुणों की अत्यन्त पराकाष्ठा थी। मनुष्य-चोले में जो सर्वोत्तम जन्म हो सकता है, वह उनका था। अन्य कोई भी व्यक्ति शारीरिक या आत्मिक दानों दृष्टिकोणों से इतना सुन्दर, आकर्षक, प्रभावशाली और प्रभुत्वशाली नहीं हुआ। सतयुग से लेकर कलियुग के अन्त पर्यन्त अन्य कोई भी इतना महान् न हुआ है, न हो सकता है। श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व इतना महान् और आकर्षक था कि यदि आज भी वह इस पृथ्वी पर कुछ देर के लिए प्रगट हो जायें तो क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या ईसाई, क्या यहूदी, सभी उनके सामने नत-मस्तक हो जायेंगे और मुग्ध होकर उनकी छवि निहारते खड़े रहेंगे।

श्रीकृष्ण इतने महान् कैसे बने?

अब प्रश्न उठता है कि **जबकि श्रीकृष्ण जन्म ही से महान् थे तो अवश्य ही उन्होंने पूर्व जन्म में कोई महान् पुरूषार्थ किया होगा।** लोगों में एक छन्द भी प्रसिद्ध है जिसका अर्थ यह है कि 'हे राधे तुमने कौन-सा ऐसा पुरूषार्थ किया था कि जिससे वैकुण्ठ नाथ श्रीकृष्ण तुम्हारे अधीन हो गये?' तो जो बात राधे के बारे में प्रष्टव्य है, वही श्रीकृष्ण के बारे में भी पूछी जा सकती है कि 'वह कौन-सा सर्वश्रेष्ठ पुरूषार्थ था जिससे कि उन्होंने उस सर्वश्रेष्ठ देव पद को तथा राज्य-भाग्य को प्राप्त किया?'

श्रीमद्भगवतगीता में लिखा है कि कृष्ण योगीराज थे; वह योगाभ्यास किया करते थे। परन्तु सोचने की बात है कि योगाभ्यास या अन्य कोई पुरूषार्थ तो किसी अप्राप्त सिद्धी की प्राप्ति ही के लिए किया जाता है, परन्तु श्रीकृष्ण तो पूर्णत: तृप्त थे क्योंकि उन्हें धर्म, धन और जीवनमुक्ति सभी श्रेष्ठ फल प्राप्त थे; सोलह कला सम्पूर्ण देवपद से भला और क्या उच्च प्राप्ति हो सकती थी कि जिसके लिए श्रीकृष्ण योगाभ्यास करते? श्रीकृष्ण के जीवन में तो किसी दिव्य गुण की, आत्मिक पवित्रता या शक्ति की या श्रेष्ठ भाग्य के अन्तर्गत गिनी जाने वाली अन्य किसी वस्तु, भोग्य, आयुष्य आदि की भी कमी नहीं थी कि जिसकी प्राप्ति के लिए वह योगाभ्यास करते। अतएव विवेक द्वारा तथा ईश्वरीय महावाक्यों द्वारा स्पष्ट है कि वास्तव में श्रीकृष्ण ने अपने पूर्व जन्म में अर्थात् श्रीकृष्ण पद प्राप्त होने से पहले वाले जन्म में योगाभ्यास किया था।

उक्ति प्रसिद्ध है कि ईश्वरीय ज्ञान द्वारा ''नर को श्री नारायण और नारी को श्री लक्ष्मी पद की प्राप्ति होती है।'' तो स्पष्ट है कि श्रीकृष्ण अपने श्री नारायण पद की प्राप्ति से पहले वाले जन्म में साधारण नर रहे होंगे और उसी जीवन में उन्होंने गीता-ज्ञान की धारणा की होगी। गीता में यह ईश्वरीय वाक्य हैं कि ' हे वत्स, इस ज्ञान और योग द्वारा तू स्वर्ग में राजा बनेगा' और कि 'तू इस योग द्वारा श्रीमानों के घर में जन्म लेगा।' इससे सिद्ध है कि 'श्री' की देवोचित उपाधि का अधिकारी बनने से पूर्व तथा वैकुण्ठ का देवराज पद प्राप्त करने से पूर्व के जन्म में ही श्रीकृष्ण ने गीता-ज्ञान और योगाभ्यास रूपी पुरूषार्थ किया होगा। लोग यह वाक्य भी प्राय: प्रयुक्त किया करते हैं कि 'न जाने नारायण किस साधारण रूप में आये होंगे और तब उन्होंने श्री नारायण पद दिलाने वाला पुरूषार्थ किया होगा। अतएव आज लोग जन्माष्टमी का उत्सव मनाते हैं तो उन्हें इस ओर भी ध्यान देना चाहिए कि श्रीकृष्ण ने गीता-ज्ञान तथा सहज राजयोग के अभ्यास द्वारा ही वह श्रेष्ठ पद को प्राप्त किया था। परन्तु आज होता क्या है कि लोग श्रीकृष्ण का गायन-पूजन तो करते हैं और उनकी महिमा तथा महानता का बखान भी करते हैं परन्तु जिस सर्वोत्तम पुरूषार्थ द्वारा उन्होंने वह महानता प्राप्त की थी और पद्मों-तुल्य जीवन बनाया था, **उस पुरूषार्थ पर अथवा ज्ञान योग रूपी साधना पर वे ध्यान नहीं देते।** वे यह नहीं सोचते कि श्रीकृष्ण हमारे मान्य पूर्वज थे, अतएव हमारा कर्त्तव्य है कि हम उनके उच्च जीवन से प्रेरणा लेकर अपना जीवन भी वैसा उच्च बनाने का यथार्थ पुरूषार्थ करें।

झाबुआ (म.प्र.)। म.प्र.के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.ज्योति।

राजसमंद। जेल में आयोजित 'आज का राजयोगी कल का डाकू' कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए कलेक्टर डॉ.प्रीतम बी.यशवंत, ब्र.कु.पंचमसिंह, ब्र.कु.रीटा, जेलर कैलाश शर्मा व कु.पूनम।

सूरत-वराछा। प्रसिद्ध उद्योगपति हिम्मतभाई को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.तृप्ति। साथ हैं ईश्वर भाई ,चेयरमेन चलथाण सुगर फैक्टरी।

नवी मुम्बई-वाशी। 'जीवन में आध्यात्मिकता का महत्व' कार्यक्रम में रोटरी क्लब के अध्यक्ष नरेश गुप्ता, ब्र.कु.शीला, मनीष सोनी, क्रियेटिव हेड सिनेमा, मंदा भोईर,पूर्व नगरसेविका।

गाजीपुर-उ.प्र.। सेन्ट जॉन्स स्कूल में तीन हज़ार बच्चों व शिक्षकों को नैतिक मूल्यों पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.संजय। मंच पर हैं ब्र.कु.निर्मला, ब्र.कु.सुनिता, फादर डैविड तथा अन्य।

रांची। क्लीन दि माईन्ड ग्रीन दि अर्थ कार्यक्रम का दीप प्रज्जवलन कर उद्घाटन करते हुए सहायक अभियंता राकिशोर प्रसाद, कर्नाटक बैंक प्रबंधक गौरव मित्तल तथा ब्र.कु.निर्मला।

आस्का। पुरी गोवर्धन पीठ के शंकराचार्य निश्चलानंद जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. प्रवाती।

भावानगर (हि.प्र.)। ब्र.कु. प्रकाश ब्रह्माकुमारीज गीतापाठशाला में आये हुए भाई-बहनों को सम्बोधित करते हुए।

जबलपुर नेपियर टाउन। मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती जी की स्मृति दिवस पर आयोजित दिव्य संगोष्ठी में संबोधित करते हुए डॉ.साधना उपाध्याय तथा मंच पर अध्यक्ष त्रिवेणी परिसर निकिता पाठक, ब्र.कु.भावना, डॉ.पुष्पा पांडे, निधि गुप्ता तथा ब्र.कु.नीलम।

इन्दौर ज्ञानशिखर। पी.सी.पी सेंटर के विद्यार्थियों के लिए आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम के पश्चात ग्रुप फोटो में ब्र.कु.ओमप्रकाश , ब्र.कु.नंदिनी, ब्र.कु.शशि एवं समस्त विद्यार्थी गण।

लोनी (उ.प्र.)। दिल्ली प्रदेश के उपाध्यक्ष बनने पर मोहन सिंह बिष्ट को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु.रेखा तथा अन्य।

पन्ना (म.प्र.)। व्यसन मुक्ति रैली को शिवध्वज दिखाकर रवाना करते हुए पूर्व प्राचार्य रज्जन खरे, कन्या उच्च माध्यमिक शाला की प्राचार्या निशा जैन, ब्र.कु.सीता तथा अन्य भाई-बहनें।

ऋषिकेश। न्यूज़पेपर्स एण्ड मैगज़ीन्स ऑफ इण्डिया की चतुर्थ वर्षगांठ पर ब्र.कु.आरती को सम्मानपत्र देते हुए डॉ.रवि रस्तोगी, संस्थापक एन.एम.एफ.आई, राष्ट्रीय अध्यक्ष, एन.एम.मोदी,वन्य जन्तु कल्याण बोर्ड भारत सरकार तथा अन्य।

प्रशासक लोगों.... पेज 1 का शेष

सदा जीवन में ध्यान रखा है। खुशी खुराक भी है खजाना भी है, दोनों हमारी लाइफ में भरपूर रहें।

सत्यजीत ठाकुर, मुख्य सचिव, खादी बोर्ड व ग्रामोद्योग लखनऊ ने कहा कि अध्यात्म व धर्म से ओतप्रोत है यह स्थान। जीवन में हम छोटे-बड़े जो भी परिवर्तन ला सकते हैं उनको लाने का प्रयास करना चाहिए। शिकायत को छोड़कर नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन रोकने की जरूरत है। छोटे-छोटे परिवर्तन वातावरण को अच्छा बनाने के लिए, परिवार व समाज को बेहतर बनाने में मददगार होते हैं। आज जरूरत है कुछ करके दिखाने की। आप दूसरे को नहीं बदल सकते इसलिए आवश्यकता है अपने आपको बदलने की। प्रतिदिन आत्ममंथन करने की आवश्यकता है।

ब्र.कु.बृजमोहन ने कहा कि सुशासन, अनुशासन व प्रशासन आध्यात्मिक प्रज्ञा से सम्भव है। आज हमारे बच्चे हमारे कन्ट्रोल में नहीं, यहां तक हमारा मन ही हमारे कंट्रोल में नहीं हैं। आज सभी यह कहते सुने जाते हैं कि ये करना तो चाहता हूँ कर नहीं पाता, करना नहीं चाहता था लेकिन कर दिया। इंसान को इंसान बनाने की शिक्षा यहां मिलती है। प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु.आशा ने कहा कि वही प्रशासन श्रेष्ठ है जहां भय नहीं बल्कि परिवार की भावना हो। प्रेम, सदभाव व सहयोग की भावना से ओतप्रोत हो। वह प्रशासन जो मूल्य आधारित हैं वही आदर्श प्रशासन है। मूल्य व ईश्वरीय प्रज्ञा पर आधारित प्रशासन ही प्रेरणास्पद है। उमंग-उत्साह, हर्ष, हिम्मत स्वत: बने हुए हैं। स्वयं में निहित मूल्यों को उजागर करें तभी प्रेरित प्रशासक बन सकते हैं।

बयाना -भरतपुर। रामभरोसीलाल चेयरमेन, ग्रामोद्योग कमीशन को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.बबीता।

पटियाला। ब्र.कु.जगदेव को दानवीर सेठ चिरंजीलाल अवार्ड से सम्मानित करते हुए राष्ट्रीय ज्योति कला मंच, एच.आर.ग्रुप ऑफ कम्पनीज के सदस्यगण।

वाणी से होती है व्यक्ति की पहचान

दुनिया में भी ये कहावत है - व्यक्ति की पहचान वाणी से होती है तथा वाणी से पता चलता है कि ये किस वर्ण का है। आगे के जन्म भी उसके किस वर्ण के होंगे या पिछला जन्म भी उसका किस वर्ण का होगा, अभी तक वो संस्कार उसके अंदर स्पष्ट दिखाई देते हैं। मनुष्य को अपने अंदर परिवर्तन करना चाहिए। भगवान ने गीता में यह उपदेश देते हुए कहा है कि अपने स्वभाव और विकास की स्थिति को पहचान, प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वाभाविक कर्म का, निष्ठापूर्वक पालन करना चाहिए। परंतु इसमें ईश्वर अर्पण भावना से कार्य करने से अहंकार सर्वथा लुप्त हो जाता है। अहंकार को जीतने की यही विधि है कि परमात्मा करनकरावनहार है इसलिए जब कर्म करने के बाद भी वो भाव अंदर में निर्मित होता है कि ये ईश्वर अर्पण है। तो उसमें अहंकार लुप्त होने लगता है। अहंकार के अभाव से पूर्वाजित वासनाओं का क्षय होता है और नवीन बंधन कारक वासना उत्पन्न नहीं होती है। क्योंकि अहंकार ही सभी कमजोरियों की जड़ है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, आलस्य इन सबकी जड़ अहंकार है। अगर अहंकार को इंसान जीत ले तो बाकी सभी विकारों को जीतना आसान हो जाता है। क्योंकि बीज को ही खत्म कर दिया, तो बीज से उत्पन्न सारी बातें स्वत: समाप्त हो जाती है। इसलिए कहा कि नवीन बंधनकारक वासनायें भी उत्पन्न नहीं होती हैं।

उसके अतिरिक्त चित्त की शुद्धि भी प्राप्त होती है। जितना व्यक्ति अहंकार को जीत सकता है। उतना उसकी आंतरिक चित्त की शुद्धि होने लगती है। जिसका अंत:करण शुद्ध होता है, वह परमात्मा के दिव्य स्वरूप का अनुभव प्राप्त कर सकता है। यही वास्तविक सिद्धि है। उस परमात्म शक्ति का अनुभव करना यही वास्तविक सिद्धि है। यह तभी हो सकता है, जब व्यक्ति अपने अहंकार को सम्पूर्ण रीति से जीत लेता है।

भगवान ने सर्वोच्च सिद्ध अवस्था अर्थात् ज्ञान की पराकाष्ठा प्राप्त करने वाले

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

के लक्षण बताए हैं। अपनी बुद्धि से शुद्ध होकर तथा धैर्य पूर्वक मन को वश करते हुए इंद्रिय तृप्त विषयों का त्याग कर राग-द्वेष से मुक्त होकर जो व्यक्ति एकांत स्थान में वास करता है। जो अल्पाहारी हो, जो अपने शरीर, मन, वाणी को वश में रखता है, जो सदैव समाधि में रहता है तथा पूर्णत: विरक्त, मिथ्या अहंकार, मिथ्या शक्ति, मिथ्या गर्व, काम, क्रोध तथा भौतिक वस्तुओं के संग्रह से मुक्त है। जो मिथ्या स्वामित्व की भावना से रहित है तथा शांत है वह निश्चय ही आत्म साक्षात्कार के पद को प्राप्त होता है। इस प्रकार जो दिव्य पद पर स्थित है, वह सर्वोच्च सिद्ध अवस्था को अनुभव करता है और प्रसन्न हो जाता है। वह न शोक करता है, न किसी की कामना करता है और वह प्रत्येक जीव के प्रति समभाव अर्थात आत्म-भाव को विकसित करता है। ये सिद्ध अवस्था की या ज्ञान की पराकाष्ठा की स्थिति के लक्षण हैं। अर्जुन यहां फिर एक प्रश्न पूछता है।

प्रश्न:- ज्ञान की पराकाष्ठा क्या है ?

उत्तर:- भगवान कहते हैं - जब अवस्था परिपक्व हो जाती है। तब भगवान जो, अलौकिक प्रभाव वाला है, अजर, अमर, शाश्वत् गुणधर्म वाले हैं, उसे यथार्थ जान लेते हैं। ये है ज्ञान की पराकाष्ठा अर्थात् परमात्मा के प्रति कोई मतभेद या कोई उलझन नहीं रहती है, परमात्मा जो है जैसा है उस स्वरूप में उसको जान लेना उसको प्राप्त करने बराबर हो जाता है। वह भगवान का आश्रय लेने वाला पुरूष सम्पूर्ण कर्म को सदा करते हुए, ईश्वरीय कृपा में सदा रहने वाले, अविनाशी पद को प्राप्त करता है। इसलिए हे अर्जुन, सम्पूर्ण कर्म को मन से मुझे अर्पित करके बुद्धियोग मुझमें स्थित करो। इस प्रकार निरंतर मुझमें चित्त लगाने वाला मेरी कृपा से सर्व विघ्नों को पार कर लेता है। परमात्मा ने यही बताया। कई बार कई आत्मायें ये सोचती हैं कि भगवान की कृपा मेरे पर अनुभव क्यों नहीं होती है। तो भगवान ने इसका भी रहस्य बता दिया कि भगवान की कृपा किस पर होती है। जो निरंतर चित लगाने वाला है वह मेरी कृपा से सर्व विघ्नों को पार कर लेगा। परंतु यदि अहंकार वश तुम मेरी मत नहीं सुनोगे तो नष्ट हो जाओगे। क्योंकि तुम्हारी प्रकृति अर्थात् संस्कार तुम्हें प्रवृत होने के लिए मजबूर करेगें। कौन से संस्कार ? जो अशुद्ध संस्कार है वह उसी दिशा में प्रवृत्त होने के लिए हमें मजबूर करते रहेंगे। क्रमश:

दया, कृपा और करूणा

भक्त लोग भगवान की महिमा करते हुए प्राय: कहते हैं कि -''हे प्रभो, आप दयालु हैं, कृपा के सागर हैं, करूणा के सिन्धु हैं, आप की महिमा अपरम्पार है, प्रभु! मित्रजन भी जब परस्पर मिलते हुए एक-दूसरे से हालचाल पूछते हैं- ''सब ठीक है, आपकी कृपा है।'' या तो वे कहते हैं - ''चल ही रहा है बस आपकी कृपा चाहिए।'' यह दया, कृपा, करूणा क्या है? आखिर जब हम भगवान से या मित्रजनों से 'कृपादृष्टि' की इच्छा प्रगट करते हैं तो उनसे क्या चाहते हैं? क्या परमात्मा को 'दयानिधि' 'कृपानिधि' आदि कहने का यह भाव है कि वह हमारे पापों के लिए हमें क्षमा प्रदान करते हैं? क्या इन उपाधियों का यह अर्थ है कि वे हमारे पुरूषार्थ के बिना ही हम पर वरदानों की वर्षा करते हैं? क्या हम यह मानते हैं कि भगवान सृष्टि और अध्यात्म के नियमों को एक ओर रख कर तथा कर्मों के विधान को छोड़कर अपने प्रशंसकों या याचकों को निहाल और मालामाल कर देते हैं? अन्यश्च, जब हम यह कहते हैं कि धर्म-प्रवृत्ति के लोग स्वभाव से ही 'दयालु' होते हैं तो क्या हमारा यह भाव होता है कि वे निर्धनों और अपाहिजों को धन-वस्त्र-अन्न आदि का दान देते हैं? धार्मिक प्रवचनों या धर्म-सम्मेलनों के अन्त में यह नारा लगाया जाता है कि ''प्राणियों पर दया हो; तो क्या उससे हमारा यह अभिप्राय होता है कि दीन-दुखियों को रोटी-कपड़ा दिया जाय, उन्हें मारा-पीटा न जाय तथा उन्हें क्षमा का दान दिया जाय? जब हम यह कहते हैं कि योगियों में करूणा होनी चाहिए तो क्या इसका अर्थ होता है कि वे दीन-दुखियों को रोग-निर्धनता से निवृत्ति दिलायें?

'दया' - किस पर, कब, कहां तक, किस तरह?

आज संसार में निर्धनता का तो यह हाल है कि 50 प्रतिशत से भी अधिक लोग निर्धनता की रेखा (Poverty-Line) से नीचे का जीवन व्यतीत करते हैं। विशेष रूप से एशिया और अफ्रीका में तो अवर्णनीय गरीबी है। भारत देश में भीख मांगने वाले की तथा पैदल-पथ (Foot-Path) पर लेटनेवालों की, बेरोजगारों की और निर्धनों की दु:खगाथा कही ही नहीं जा सकती। जो लोग निर्धनता की रेखा से उपर का जीवन जीते हैं, स्वयं उनकी दशा भी चिन्ताजनक और गम्भीर है। अत: यदि अन्न-धन, वस्तु-वस्त्र इत्यादि देने को ही 'दया' कहा जाय, अर्थात यदि दान करने ही का दूसरा नाम 'दया' है, तब तो कितनों पर दया की जा सकेगी? चारो ओर से गरीबों, आपदा-ग्रस्त लोगों और ज़रूरतमन्दों के अपार समूह से तो हम घिरे हुए हैं। जो स्वयं ही मध्यम श्रेणी या वर्ग का होगा जिसकी अपनी आमदनी भी मुश्किल से गुज़ारे लायक होगी वह दूसरे कितने लोगों पर दान-दया कर लेगा और इस बढ़ती हुई समस्या का कहां तक समाधान कर पायेगा? यदि वह अपनी दया-वृत्ति पर अंकुश लगायेगा तो उसके इस मानवी गुण (Human Value) का विकास कैसे होगा? यदि वह अंकुश नहीं लगायेगा और दया वृत्ति को खुली छूट दे देगा तब तो वह एक दिन में ही अपना वेतन समाप्त कर स्वयं दया के दरवाजे पर जा बैठेगा। इसलिए किसी ने कहा है कि दया-दान की शुरूआत पहले अपने ही घर से होनी चाहिए। (Charity begins at home). दूसरों को आर्थिक सहायता देने से पहले अपने घर की गरीबी को दूर करनी चाहिए। घर के लोग भूखे मर रहे हों और बेटा दानवीरों में अपना नाम लिखवा रहा हो, यह तो वही बात हुई कि ''आसपास बरसे, दिल्ली पई तरसे''। बाहर वालों पर दया और घर वालों के प्रति अवहेलना और उपेक्षा - यह तो उऊटपटांग दया है, यह सीधी-सादी 'दया' तो नहीं है। घर वालों का क्या दोष है; उनके प्रति घृणा क्यों है; उनका बहिष्कार किसलिए? इस दया के पीछे तो कुछ और ही वृत्ति है। परंतु अगर घर वालों पर दया की जाय तो वह 'दया' क्या हुई? वह तो 'कर्तव्य-पालन' कहलायेगा। उसे तो सम्बन्ध निभाना कहेंगे। वह तो 'लोक-मर्यादा का पालन' है - वह 'दया' कैसी? परंतु हां, जिस व्यक्ति से हमें अपने सम्बन्ध या कर्तव्य के अनुसार जो करना चाहिए, उससे यदि हम अधिक करते हैं क्योंकि उसे दु:खी देखते हैं, तब शायद उसे 'दया' या 'कृपा' कहा जायेगा। किन्तु, उसे भी दया के बजाय 'स्नेहाभिव्यक्ति', या उदारता' कहा जायेगा क्योंकि वह घर वालों या सम्बन्धियों से किया गया।

परन्तु यदि घर वालों अथवा मित्रों ही पर हम सदा दान-दया की वर्षा करते रहें तब तो ''अन्धा बांटे रेवड़ियां, फिर-फिर अपनों को ही दे'' वाली कहावत हम पर ही चरितार्थ होगी। फिर, अगर घर वालों पर ही धन-धान्य लुटाते रहे तब तो यह कौटुम्बिक स्वार्थ की सिद्धि और 'मोह-ममता' की रीति-नीति हुई; यह कोई 'दया' तो न हुई। यह तो संकुचित दायरे में, कुएं के मेंढक की तरह परिवार के घेरे में ही चक्कर काटने की बात हुई। इसके अतिरिक्त, 'घर' से हमारा अभिप्राय यदि देह के सम्बन्धी हैं, तब तो घर वालों पर ही सुख-सामग्री लुटाना गोया देहाभिमान ही को मुख्यता देने के तुल्य है। देह के सम्बन्धियों पर ही सदा सभी कुछ कुर्बान करते चलें तब तो यह कर्मों का खाता बढ़ाते जाने का ही कर्म हुआ। उनको तथा स्वयं को कर्म की अधिकाधिक ज़ंजीरों में जकड़ने ही की न्यायी यह कर्म हुआ। तब इसे 'दया, 'दान' या 'कृपा' की संज्ञा कैसे दे सकेंगे?

अगर कोई अपराध करता है, तब उसे दया-दान देने की क्रिया को यदि 'दया' अथवा 'कृपा' कहा जाये तब इससे तो संसार में अपराध बढ़ेगा। किसी भी देश के राष्ट्रपति को यह वैधानिक अधिकार होते हैं कि वह किसी अपराधी के द्वारा दया की अपील करने पर उसे दण्ड से मुक्त कर सकता है या दण्ड को कम कर सकता है परन्तु देश का प्रधान या राष्ट्रपति भी इस अधिकार का प्रयोग किसी विरल ही परिस्थिति में प्रयोग करता है वरना तो हर कोई यह कोशिश करेगा कि क्षमा मांग लें और दया के लिए आवेदनपत्र दें और अनुनय-विनय करे कि – ''हे राष्ट्रपति महोदय, आप दया के सागर हैं, कृपया हम पर दया कीजिये। इसके अतिरिक्त, दान या दया तो पात्र पर ही करने की ताकीद की जाती है। कुपात्र पर दान या दया करने वाला तो दोषी माना जाता है। वह तो पुण्य के बजाय पाप का भागी बनता है। परन्तु, पहले तो किसी के मन की गहराईयों में उतर कर उसके अन्त तक पहुंचना कि यह 'पात्र' है या 'कुपात्र' बहुत ही कठिन है, फिर आज यदि कोई पात्र है भी तो दया के बाद वह कुपात्र बन जाये तो उसका क्या पता है? पृथ्वीराज ने महमूद ग़जनवी को 17 आक्रमणों में परास्त किया और हर बार उस पर दया कर के उसे क्षमा दी परन्तु अन्त में महमूद ग़जनवी ने अठारहवीं बार पुन: आक्रमण कर के पृथ्वीराज को परास्त कर उसे अपना बन्दी बना लिया, उसकी आंखे भी निकलवा दी और आखिर उसे मरवा भी डाला और इस सबका यह परिणाम हुआ कि समस्त देश को हज़ार वर्ष गुलामी भोगनी पड़ी।

फिर एक बात यह भी है कि कर्म की गति तो अटल मानी गयी है। हम कर्म-विधान में हस्तक्षेप कर के, किसी पर दया करके उसकी हालत को अल्पकाल के लिए कुछ अच्छा भी कर दें, परन्तु, उस व्यक्ति को अपने किए हुए कर्मों का आज नहीं तो कल फल तो भोगना ही पड़ेगा और, इसके अतिरिक्त, हम ने जो उसके प्रति कर्म किया उसका हिसाब भी उसे चुकाना ही पड़ेगा। तो प्रश्न उठता है कि हमारी दया का क्या मूल्य और महत्व हुआ?

अगर कहा जाए कि दया करने से हमारा अपना मन निर्मल होता है और हमारा अपना नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास होता है और कि हम अपनी देह के सम्बन्धों के कारण से नहीं बल्कि इन्सानियत के तकाजे से, मानवता के नाते से, विश्व-बन्धुत्व की भावना से प्रेरित होकर दया करते हैं, तो भी जिस पर हम दया करते हैं, उस पर तो कर्मों का बोझ तो चढ़ाते ही हैं और अपने लिए भी कर्ज का बीज तो बोते ही हैं -- हम अपनी दया से कितनों की दशा कहां तक और कितने समय के लिये और किस अंश तक सुधार पाते हैं, - वह बात अलग रही।

तो क्या किया जाय अगर दया करें तो कर्मों का खाता खुल जाता है, पात्र-कुपात्र का भेद इस कलियुग में पता चलता नहीं और, फिर, मन में भी दया की एक सीमा तो फिर भी बनी ही रहती है। अगर हम दया नहीं करते तो स्वयं को इस गुण से वंचित हुआ महसूस करते हैं तथा हम में निष्ठुरता, कठोरता और निर्दयता का प्रवेश होता हुआ महसूस होता है। सम्बन्धियों को न दें तो वे नाराज़ होते हैं; उन्हें दें तो देहाभिमान की मनोवृत्ति और उनकी बढ़ती हुई अपेक्षाएं सामने आती हैं ''नेकी कर दरिया में डाल'' – की नीति अपनायें तो खारे पानी वाले सागर में मिश्री का एक टुकड़ा डाल देने से मन को सन्तुष्टता नहीं महसूस होती और अधिकाधिक करना चाहें तो इतना सामर्थ्य कहां है? - (ब्र.कु.जगदीशचन्द्र)

सासाराम। लोकसभा स्पीकर मीरा कुमार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बबीता।

भुवनेश्वर। 'हाउ टू लीड ए हेल्दी फैमिली लाईफ' कार्यक्रम का दीप प्रज्जवलन कर उद्घाटन करते हुए कम्पनी सचिव के.एन.रविन्द्र, सोमा मंडल, जनरल मैनेजर मार्केटिंग, ब्र.कु.शारदा, ब्र.कु.बिनी तथा बी.के.लीना।

भवानीगढ़। सीनियर सेकेन्डरी स्कूल के बच्चों को नैतिक मूल्यों पर प्रवचन करते हुए ब्र.कु.राजेन्द्र।

दिल्ली -जनकपुरी। राष्ट्रपति महामहिम प्रणव मुखर्जी की सुपुत्री श्रमिष्ठा मुखर्जी द्वारा नेशनल वुमेन एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित होते हुए ब्र.कु.विजयालक्ष्मी।

फिल्लोहर -शाहखोट। लक्ष्मी नारायण मंदिर में प्रोग्राम के बाद अजित सिंह कुहर को ईश्वरीय सौगात देते हुए बी.के.अमीरचन्द तथा बी.के.राज।

दिल्ली-शक्ति नगर। समर कैम्प के ग्रैन्ड फिनाले में बच्चों को सम्मानित करने के पश्चात ब्र.कु.रानी, ब्र.कु.पूनम, ब्र.कु.पूजा बच्चों के साथ।

आपकी खुशी आपके पास

क्या आप अशांत हैं, क्या आप अवसाद के दौर से गुजर रहे हैं, क्या आपके मिजाज को क्रोध ने वश कर लिया है, क्या आप तनाव से ग्रस्त हैं। क्या आपने कभी सोचा है मन की शांति के लिए रिमोट कंट्रोल आपके पास है। देखिए नॉन स्टॉप, बिना किसी विज्ञापन के, आध्यात्मिकता के गुह्य रहस्यों को स्पष्ट करता हुआ ''पीस ऑफ माइंड चैनल, आपके शहर में उपलब्ध है। Enquiry Mob. 8140211111 channel-697

तासगांव (महा.)। प्रतापराव पाटिल, उपाध्यक्ष, तात्या साहेब कोरे वारणा सहकारी शुगर फैक्ट्री को आध्यात्मिक संदेश देने के पश्चात ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.डॉ. वैशाली।

सूचना- ओमशान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने वाले भाइयों की आवश्यकता है। ईमेल, वेबसाइड तथा साफ्टवेयर की जानकारी रखने वाले भाई की भी आवश्यकता है। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें -
E-mail-
mediabkm@gmail.com,
Mob.-8107119445

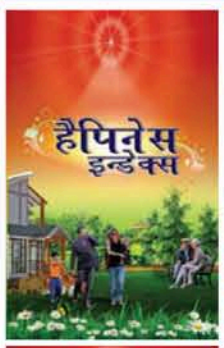

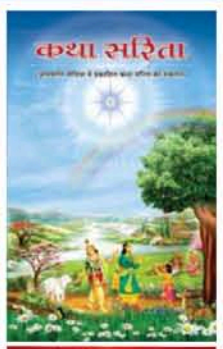

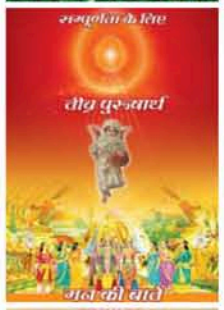

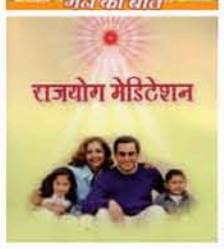

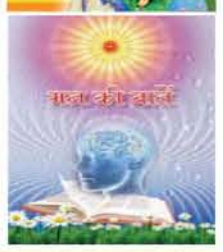

सूचना

आप सभी भाई-बहनों की मांग पर राजयोग प्रवचन माला की पुस्तक 'राजयोग मेडिटेशन' नवीन संस्करण के साथ, भगवान कौन? की गीता का आध्यात्मिक रहस्य पुस्तक हैप्पीनेस इंडेक्स, कथा सरिता उपलब्ध है। इसे आप ओम शांति मीडिया, शांतिवन कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

हम प्रत्येक दृष्टि से पवित्र हों

-स्वामी चक्रपाणि

पवित्रता एक पक्षीय नहीं होती। वह बहुआयामी भाव वाचक संज्ञा है। तन की पवित्रता केवल स्नान से नहीं अपितु विचार और व्यवहार से है। वाणी की पवित्रता केवल सत्य बोलने से नहीं अपितु मधुर और लोकमंगल वाणी बोलने से है। किसी एक पक्ष को तब तक पवित्र नहीं कहा जा सकता जब तक उसका उद्देश्य एवं परिणाम सात्विक एवं प्राणि मात्र के लिए श्रेयस्कर न हो।

वेदों में ऋषियों ने पवित्रता को आन्तरिक तत्व माना है। इसलिये बार-बार कहा गया है कि स्वयं को जानो। यह लघु पदावली जीवन के व्यापक लक्ष्यों की ओर इंगित करती है। जब तक व्यक्ति स्वयं के होने के अर्थ को नहीं जानेगा तब तक वह अपने स्वाभाविक कर्त्तव्यों को भी नहीं समझ पायेगा।

अथर्ववेद में ऋषि प्रार्थना करते हैं कि हे भगवान! यदि जागते या सोते समय अर्थात अज्ञानवश कोई पाप कार्य पहले मुझसे हो गया हो, ऐसा कभी भविष्य में न हो। एक अन्य मंत्र में साधक कामना करता है कि हम सब बुरे विचारों, बुरे आचारों, धार्मिक विघ्नों, निर्बलताओं, दरिद्रता तथा प्रत्येक बुराई को अपने जीवन से दूर करें। इस कारण से ही ऋषियों ने ऋग्वेद में सप्त मर्यादाओं का उल्लेख किया है।

ये सप्त मर्यादायें इस प्रकार हैं–

1. अहिंसा – मन, वचन और कर्म से ऐसा कार्य न हो, जो अनैतिक हो और किसी को कष्ट पहुंचाता हो।

2. सत्य – वैदिक चिंतन में सत्य का अति व्यापक अर्थ है। केवल सत्य बोलना ही पर्याप्त नहीं है अपितु प्रत्येक उस सच्चाई को स्वीकार करना, जो धर्मानुकूल है और आपका स्वाभाविक कर्त्तव्य है, सत्य कहलाता है। जैसे माता–पिता की सेवा करना एक सत्य है। असहाय की सहायता के लिए विनम्रता और तत्परता से खड़े हो जाना एक सत्य है। जो जीवन की सच्चाई को स्वीकार करता है और उसके अनुकूल व्यवहार करता है, वही सत्य वाणी है।

3. अस्तेय – भारतीय संस्कृति में अस्तेय का बहुत महत्व है। हमें उस वस्तु, पद या सम्मान की इच्छा नहीं करनी चाहिए जिसके हम अधिकारी नहीं है। बिना योग्यता-परिश्रम-अधिकार के कोई भी वस्तु, पद, या सम्मान प्राप्त करना पाप है। हमारी कमाई बिल्कुल पवित्र होनी चाहिए।

4. ब्रह्मचर्य– ब्रह्मचर्य का अभिप्राय आत्मसंयम से है। मन,वचन और व्यवहार में धीरता और सहनशीलता होनी चाहिए। साथ ही आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का आदर करते हुए धैर्यपूर्वक जीवन निर्वाह करना ब्रह्मचर्य कहलाता है।

5. शौच – शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक पवित्रता शौच कहलाती है।

6. स्वाध्याय – जीवन विकास के लिये स्वाध्याय का होना परम आवश्यक है। जब तक व्यक्ति आत्मावलोकन कर अपने अंत:करण में असीम ऊर्जा का साक्षात्कार नहीं करता, वह अपने जीवन को पापमुक्त नहीं कर सकता।

7. अन्तिम मर्यादा है ईश्वरीय साधना – ईश्वर की साधना हमें अखंड विश्व के प्रति सहयोगी और करुण बनाती है। जिससे हम पाप कर्मों से दूर रहते हैं। वेदों में स्पष्ट है कि हे मानव! तू पाप में मत गिर तू अच्छे मार्ग पर चल, अपना और सबका कल्याण कर।

मन की बातें

- ब्र.कु.सूर्य

प्रश्न: मेरी समस्या यह है कि मेरा अमृतवेले योग ही नहीं लगता। मैने बहुत कोशिश कर ली। परन्तु 5 बजे से स्वत: ही अच्छा योग लगता है।

उत्तर - आप 5 बजे से अच्छा योग किया करें परन्तु आपकी यह तीव्र इच्छा रहेगी ही कि 4 बजे भी योग का सम्पूर्ण आनन्द मिले। आप सवेरे 4 बजे अवश्य उठें। उठकर स्नान कर ले। किसी–किसी का ब्रेन स्नान व ब्रश करने के बाद ही फ्रेश व एक्टिव होता है। इसके बाद आप एक अव्यक्त मुरली पढ़ें तथा उसके मुख्य प्वाइन्टस लिखें। तत्पश्चात् मन पसन्द ईश्वरीय गीत सुनें और फिर बाबा के चित्र के आगे बैठकर उनसे रुह रिहान करें तब तक 5 बज जाएंगे फिर योग का आनन्द लें। धीरे धीरे 4 बजे भी यही आनन्द मिलने लगेगा। सवेरे उठकर एकान्त में भ्रमण भी कर सकते हैं।

प्रश्न: मेरे पति व्यापारी हैं। वे घर में रात्रि 12 बजे ही आते हैं। मैं 1 बजे सोती हूँ, तो 4 बजे नहीं उठ सकती। प्रतिदिन 6 बजे ही उठ पाती हूँ और उठते ही मन भारी हो जाता है कि मेरा अमृतवेला मिस हो गया। सारा दिन इस कारण मेरा मन उदास रहता है। सब कहते हैं तुम्हें क्या हो गया है?

उत्तर : आप रात्रि में ही योग कर लिया करो और सवेरे जब भी उठो तब से ही योग आरम्भ करो। 6 बजे से 8 बजे तक आप अच्छी स्थिति बनायें। परन्तु शाम को 6 से 8 बजे के मध्य आप एक घण्टा योग अवश्य करें। यह समय भी अमृतवेले जैसा ही है। सूर्योदय से पूर्व व सूर्यास्त के आसपास का समय बहुत सुन्दर होता है। ऐसा करने से आपको अमृतवेले जैसा ही आनन्द आएगा। जीवन में एक बात याद रखनी है कि जो नहीं हो सकता, उसके कारण मन को उदास नहीं रखना है और जो सहज सम्भव हो उसका ही आनन्द लेना है। आप स्वयं को प्रसन्न रखें। उठते ही याद करें अहा... मुझे इस जीवन में क्या-क्या मिला... मैंने भगवान को देखा... उसे पढ़ाते देखा ...मेरे जैसा भाग्यवान कोई नहीं। मेरा तो जन्म ही सफल हो गया ...मेरे जैसा खुशनसीब भला कौन होगा ... स्वयं भगवान मेरा भाग्य बना रहा है, इन विचारों से स्वयं को आनन्दित करें।

प्रश्न: मैं एक माता हूँ। मेरा योग बिल्कुल नहीं लगता, परन्तु मैं अच्छी योगी बनना चाहती हूँ, कृपया मेरा मार्ग दर्शन करें?

उत्तर: योगी बने बिना तो ब्राह्मण जीवन की सफलता ही नहीं है। आप श्रेष्ठ योगी बनना चाहती हैं अति उत्तम बात है। प्रथम एक सप्ताह आप दो स्वमान का अभ्यास प्रति घण्टे आठ बार करें। स्वमान है - मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और मैं एक महान आत्मा हूँ।

दूसरे सप्ताह हर घण्टे अशरीरीपन का अभ्यास व आत्मिक दृष्टि का अभ्यास करें। यह अनुभूति हो कि मैं चमकती हुई ज्योति हूँ और इस देह से न्यारी हूँ।

तीसरे सप्ताह परमधाम में या अपने सामने, महाज्योति शिव बाबा को देखें। हर बार एक मिनट तक और हर घन्टे में 3 बार करें। इसके बाद सारे दिन में 3 बार घर में ही बैठकर 15-15 मिनट तक योग करें, इसमें परमधाम से बाबा की किरणें लें। घर में बाबा का आह्वान 5 बार करें। इस तरह सवेरे अमृतवेले उठकर बाबा से रुहरिहान करो और योग लगाओ और सारा दिन ऐसे ही योगाभ्यास करो तो आप योगी बन जाएंगे।

प्रश्न: हम कर्म गति के बारे में कुछ गुह्य बातें जानना चाहते हैं, क्योंकि हम देखते हैं कि अनेक पुरानी बहनें व भाई शारीरिक रोगों से कष्ट पा रहे हैं। मृत्यु भी कष्टकारक हो रही है। जिन्होंने त्याग तपस्या व सेवा की उनकी ऐसी हालत क्यों हो रही है?

उत्तर: कर्म गति सचमुच ही अति गुह्य है। पूर्व जन्मों में किसने क्या-क्या किया है, कोई नहीं जानता। सबसे बड़े पाप का खाता बनाता है काम महाशत्रु। दूसरा, पाप को बढ़ाने वाली चीज है .. दूसरों को सताना, दुख देना। तीसरा पाप है, मांसाहार व शराब सेवन.. चौथा पाप है, भ्रष्टाचार.. अन्य अनेक भी पाप कर्म हैं। मनुष्य जब पाप करता है, तो उसे उसके पाप का एहसास नहीं होता, वह अपने कर्मों को उचित मानता है। जैसे मांसाहार करने वाले यह नहीं जानते कि वे पाप कर रहे हैं। ज्ञान में चलने के बाद भी मनुष्य कई पापकर्म करता है और ये पाप सूक्ष्म बन 100 गुणा सजा देने वाले होते हैं। दूसरों के प्रति कुदृष्टि रखना, किसी को पवित्र से अपवित्र बनने के लिए प्रेरित करना, भगवान पर समर्पित होकर शादी करना ये महापाप है।

इसके अतिरिक्त किसी के कहने पर या दबाव में आकर पवित्र आत्माओं के लिए गलत निर्णय लेना, उन्हें अकारण घर भेज देना, दूसरों के जीवन से खिलवाड़ करना, भगवान से पवित्रता की प्रतिज्ञा करके भंग करना या उनकी ग्लानी करना -ये महापाप हैं। किसी की खुशी छीन लेना। अपशब्दों से दूसरों को डिस्टर्ब करना, दूसरों की अशान्ति का कारण बनना, यज्ञ का नुकसान करना, यज्ञ की सम्पत्ति को अपने प्रति ज्यादा यूज करना, दूसरों को सुख न देना, दूसरों को असन्तुष्ट करना, दूसरों पर तंत्र मंत्र कराना ये सब पाप हैं। किसका योग कैसा है, पुण्य का खाता कैसा है, पवित्रता कैसी है या किसने क्या क्या किया - ये सबकी कर्म कहानी अपनी अपनी है। स्वार्थ वश मनुष्य कई गलत काम करता है, वह अपनी सत्ता का भी दुरुपयोग करता है - ये ही सब कारण है कि पवित्र आत्माओं को भी कष्ट होता है।

प्रश्न: मैं एक कन्या हूँ और अपनी संकल्प शक्ति को बहुत बढ़ाना चाहती हूँ मुझे विधि बतायें।

उत्तर: सुन्दर लक्ष्य है आपका। संकल्प की एनर्जी ही भाग्य की एनर्जी है। संगमयुग पर ज्ञान योग के मार्ग पर चलने वाले अपनी संकल्प शक्ति को बहुत बढ़ा सकते हैं। इतना कि प्रकृति भी हमारी सुने वा यह देह भी हमारी सुने। घटनाओं पर भी अपना प्रभाव डाल सकते हैं। इसके लिए प्रथम शर्त है - व्यर्थ से मुक्ति। व्यर्थ सुनना, देखना व पढ़ना नहीं। व्यर्थ से यह शक्ति तीव्रता से नष्ट हो जाती है। स्वयं को अन्तर्मुखी भी रखना व हफ्ते में 2 बार मौन अर्थात 2 दिन मौन रहकर अच्छा योग करना। योग 4 घण्टे प्रतिदिन से बढ़ाकर 8 घण्टे तक ले जाओ।

संकल्प शक्ति बढ़ती है - अशरीरीपन से व स्वमान से। आप 3 मास का एक प्लान बनाओ कि प्रति घण्टा 3 बार अशरीरीपन व किसी भी स्वमान का अभ्यास करना है। मुख्य स्वमान, मैं मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ, मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मैं इष्ट देवी हूँ, मैं विजयी रत्न हूँ और मै फरिश्ता हूँ। ये अभ्यास करने से आप इस लक्ष्य में अवश्य सफल होंगी।

नयागंज -कानपुर। राजयोग शिविर में डीएससीएल शुगर मिल के जनरल मैनेजर एस.के.अग्निहोत्री, ब्र.कु.रेखा तथा ब्र.कु.सीमा।

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरूषार्थ

स्वमान -मैं 108 की माला का विजयी मणका हूँ।

शिवभगवानुवाच -बहुत समय से जो विजयी बनते हैं, वही विजयमाला के मणके बनते हैं। अगर विजयमाला में पिराने चाहते हैं तो विजयी बनने का परिवर्तन लाना पड़ेगा। परिवर्तन में मुख्य-मुख्य बातें चेक करनी हैं। दो शब्द याद रखना है -एक तो आकर्षण मूर्ति बनना है और दूसरा हर्षित मुख। आकर्षण करने वाला है रूह। रूहानी स्थिति में ही एक-दो को आकर्षित कर सकेंगे। अगर यह दोनों बातें अपने में धारण कर लीं तो सम्पूर्ण विजयी हैं ही।

विजयमाला में आने वाली आत्मा का पुरूषार्थ - आँख खुलते ही पहला संकल्प करें कि मैं विजयी रत्न हूँ। विजयमाला का मणका हूँ। परमधाम से उतरकर इस साकार लोक व साकार शरीर में ईश्वरीय कार्य के अर्थ अवतरित हुआ हूँ। बापदादा का वरदानी हाथ छत्रछाया के रूप में स्वयं के ऊपर अनुभव करें।

बापदादा मेरे सम्मुख हैं और मुझे 'विजयी भव' का तिलक लगा रहे हैं।

चारों ही सब्जेक्ट के लिए आवश्यक धारणाएँ -**ज्ञान की सब्जेक्ट** - जितनी भी साकार व अव्यक्त मुरलियां हैं उनका गहरा अध्ययन। बाबा की मुरलियां हमारा पूरा कोर्स है। अगर हमने बाबा की एक भी मुरली मिस की तो यह कहेंगे कि हमने अपना पूरा सिलेबस ही अभी तक पढ़ा नहीं है।

योग की सब्जेक्ट - निरंतर याद, एकरस याद व एक की याद। आत्म-अभिमानी स्थिति, विदेही, अशरीरीपन की स्थिति का स्वरूप बनते जाएं। स्वराज्यअधिकारी, स्वदर्शनचक्रधारी एवं विभिन्न स्थितियों का गहन अनुभव। योग का चार्ट आठ घण्टे तक पहुंचाना।

धारणा की सब्जेक्ट - दिव्य गुणों व दिव्य शक्तियों की धारणा। ब्रह्मा बाबा के समान संकल्प, बोल, कर्म व संस्कार की धारणा।

सेवा की सब्जेक्ट -निस्वार्थ, निष्काम व निमित्त भाव से सेवा।

तीव्र पुरूषार्थियों के प्रति - प्रिय आत्मन्! यदि रात को हमारा शरीर छूट जाए तो आज के पुरूषार्थ अनुसार हम क्या पद पाएंगे? श्रीकृष्ण के साथ रॉयल फैमिली, साहूकार प्रजा या साधारण प्रजा? अब जीवन की हर घड़ी को अंतिम समझ एवररेडी बनें।

स्वमान – मैं पद्मापद्म सौभाग्यशाली आत्मा हूँ।

– सारा संसार जिस भगवान को ढूंढ़ रहा है, जिसकी एक झलक पाने के लिए तरस रहा है, वो भगवान मुझे मिल गए हैं, मेरे हो गए हैं...होगा कोई मुझ जैसा सौभाग्यशाली जिसे लोरी सुनाकर सुलाते भी भगवान हों, उठाते भी भगवान हों, खिलाते भी भगवान हों, नहलाते भी भगवान हों...वाह रे मै...वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य जो हर पल सफल हो रहा है।

2. योगाभ्यास –अ. बाबा कहते हैं कि तुम्हारे हर कदम में पद्म जमा होता है यदि तुम हर कदम मेरी याद में उठाते हो तो...तो इस सप्ताह हम पद्मापद्म भाग्यशाली आत्माएँ अपने हर कदम में बाबा को याद करने का लक्ष्य रखेंगे...हमारे हर कदम में बाबा-बाबा-बाबा निकले...।

ब. बाबा कहते हैं कि जिस श्वांस में मेरी याद है, वही श्वांस सफल है, बाकि निष्फल है...तो आएँ इस सप्ताह अपने हर श्वांस में बाबा की मधुर याद की सुगंध घोलें...श्वांसों-श्वांस याद करें...अजापाजाप चलता रहे...।

स. बाबा कहते - मेरी याद की बिंदी लगाना एक के आगे शुन्य लगाने जैसा है। जितनी बार तुम मुझे याद करते हो तो जैसे एक के आगे शून्य (10000...) लगता जाता है...तो आएँ अपने हर पल में ऐसी श्रेष्ठ कमाई करें...।

3. धारणा – समय और संकल्प को सफल करना

– 'दो बातों का अटेन्शन अण्डरलाइन करो – एक संकल्प का खजाना और दूसरा समय का खजाना...संगमयुग का समय एक सेकण्ड भी गंवाना नहीं है।' –

शिवभगवानुवाचः-

– संगमयुग का एक सेकण्ड अन्य युगों के एक वर्ष के तुल्य है, इसलिए यदि एक सेकण्ड गंवाया तो एक सेकण्ड नहीं बल्कि एक वर्ष गंवा दिया।

– बीता हुआ समय फिर कभी लौटकर नहीं आता, इसलिए अपने समय को ऐसा सफल करें कि अपने पास्ट को देखकर संतोष हो न कि पश्चाताप।

4. स्वचिंतन – मैं अपने संगम के अमूल्य समय को कैसे बिता रहा हूँ?, - कहीं मेरा समय व्यर्थ की बातों में तो व्यतीत नहीं हो रहा है?

- क्या सोचता हूँ मैं सारे दिन? क्या सचमुच इन संकल्पों की आवश्यकता है। - कैसे सफल करुँ मैं अपने एक-एक सेकण्ड और एक-एक संकल्प को? इसकी योजना बनाएँ।

5. तपस्वियों प्रति – प्रिय तपस्वियों! ये कमाई का समय है और कमाई के समय कोई भी व्यापारी गफलत नहीं करता। साथ ही ये पढ़ाई का समय है। यदि पढ़ाई के समय कोई विद्यार्थी घूमता-फिरता रहे, व्यर्थ की गपशप करता रहे, सारा साल इसी में निकाल दे तो उसका रिजल्ट क्या होगा, आप जानते हैं...हमारी ये पढ़ाई पूरे कल्प के लिए है, बल्कि कल्प-कल्प के लिए है। अभी पास होंगे तो कल्प-कल्प पास होते रहेंगे, महाराजा-महारानी बनते रहेंगे और यदि अभी फेल हुए तो कल्प-कल्प फेल होते रहेंगे, दास-दासी बनते रहेंगे...तो इस समय का कितना महत्व है...क्या हम संगम के इस अमूल्य समय को इतना ही मूल्य देते हैं?

नई दिल्ली-आर.के.पुरम। सी.सी.सी.एल.कम्पनी में 'रियलाइज़ेशन पॉवर ऑफ पॉज़ीटिव थिंकिंग एण्ड मेडिटेशन' विषय पर आयोजित सेमिनार को सम्बोधित करने के पश्चात ब्र.कु.अनिता तथा ब्र.कु.ज्योति। साथ हैं कम्पनी के अधिकारीगण तथा समस्त स्टॉफ ।

वुटवल-नेपाल। विद्युत क्षेत्रीय कार्यालय के डायरेक्टर पद्मकान्त झा, विद्युत वितरण केन्द्र के प्रमुख मनिन्द्र ठाकुर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.कमला।

जबलपुर। मध्यप्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष ईश्वर दास रोहानी को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात ओम शान्ति मीडिया भेंट करते हुए प्रकाश मोनिया।

दिल्ली -राजीव नगर । ब्र.कु.पूर्णिमा को आध्यात्मिक सेवाओं में सराहनीय योगदान के लिए सम्मानपत्र देते हुए दिल्ली पुलिस की पूर्व निदेशिका किरण बेदी।

दीव। कलेक्टर रमेश वर्मा, गणेश भारती,फाइनेंस सेक्रेटरी को आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.गीता।

गडचिरोली। व्यसन मुक्ति अभियान कार्यक्रम में जिला प्रमुख कुमारी अतराम, डॉ.सचिन, ब्र.कु.कुसुम तथा ब्र.कु.नलिनी।

जीवन में शांति व खुशी के लिए अपनाएं राजयोग

ज्ञानसरोवर। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए दादी रतनमोहिनी। साथ हैं ब्र.कु.गीता, ब्र.कु.हरीश, ब्र.कु.शर्मा जी तथा ब्र.कु.योगिनी।

ज्ञानसरोवर। ब्रह्माकुमारी संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतन मोहिनी जी ने ब्रह्माकुमारीज व्यापार एवं उद्योग सेवा प्रभाग के द्वारा 'व्यापार एवं उद्योग में सफलता के लिए आंतरिक शांति' विषय पर आयोजित सम्मेलन में भाग लेने आए देश के करीब छ: सौ से अधिक व्यापारियों एवं उद्योगपतियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि स्वर्ग की तुलना में हम आज की दुनिया को नर्क के समान मान सकते हैं। आज हम सभी को शुभ संकल्पों के दीप जगाने की जरूरत आन पड़ी है। परमात्मा हम सभी का कल्याणकारी पिता है। हम उस सर्वोच्च पिता की ऊंची संतान हैं। क्या हम सदा खुश हैं? जो दुख आने पर भी स्वयं को खुशी में रह सके वो ही आत्मा महान है।

आध्यात्मिकता हमारे अंदर ऐसी शक्ति पैदा करती है कि हम हर परिस्थिति में खुद को शांत और सुखी रह सकते हैं। आत्मिक बल की प्राप्ति हमें परमपिता को याद करने से होती रहती है। सर्व शक्तियों के दाता परमात्मा से अपना अटूट संबंध बनाये रखने की विधि राजयोग है।

प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. योगिनी ने कहा कि उद्योग में सफलता के लिए राजयोग अधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। उन्होंने आये हुए अतिथियों को राजयोग का अभ्यास भी करवाया।

प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक एम. एल. शर्मा ने अपने आध्यात्मिक जीवन का अनुभव सुनाते हुए कहा कि मैं इस सस्थान से विगत 50 वर्षों से जुड़ा हुआ हूँ। मुझे सर्वोच्च सत्ता की प्रारंभ से ही खोज थी। कलकत्ता में ब्रह्माकुमारियों के कार्यक्रम में गया। कुछ नवीनता लगी। परमात्मा एवं आत्मा का सत्य परिचय प्राप्त हुआ। शुद्ध भोजन की बात काफी जंची। हर बात आत्मा को प्रभावित करती गई। ब्रह्मा बाबा से मिला। वे अद्भुत थे। वे बच्चों पर बलिहार जाते थे। एक सप्ताह उनके साथ रहने का अवसर मिला। बाबा ने करुणामय पिता के समान प्यार दिया। यह सहज सरल ज्ञान है मगर प्राप्ति है स्वर्ग की। बुराइयों के अलावा कुछ भी छोड़ने की बात यहाँ नहीं है। मुझ जैसे व्यापारी को राजयोगी बना दिया। यह परमात्मा की ही कमाल है कि मुझ जैसे अनेक गृहस्थियों को इतना ऊंचा बना दिया। मेरा व्यापार भी काफी वृद्धि को प्राप्त होता गया। मैं कभी भी तनाव की बात सोचता ही नहीं। आपका आध्यात्मिक व्यक्तित्व ही आपका व्यापार संभालता रहता है। प्रगति होती रहती है। लोग ही आपका सहयोग करते रहते हैं। हिम्मत रखेंगे तो अतिन्द्रिय सुख मिलता रहता है। खुशी, शांति एवं आनंद बना रहता है। परमात्मा की आशीष मिलती रहती है।

फरीदकोट की ब्र.कु.प्रेम ने कहा कि ईश्वर ने हमारे अंदर अनेक शक्तियाँ भरी हुई हैं उसे सिर्फ उभारने की आवश्यकता है। मनुष्य की संकल्प शक्ति सबसे बलशाली है। हम सभी देह नहीं आत्मा हैं। आत्मा एक प्रकाश है छोटा सा सितारा है,

मुंबई के मैनेजमेंट ट्रेनर ब्र.कु.गिरीश ने कहा कि हम सभी यहाँ पर परिवर्तन करने के लिए आये हैं। आध्यात्मिकता का लक्ष्य भी यही है। मुंबई के ब्र.कु.हरीश ने प्रभाग की गतिविधियों के बारे में तथा सम्मेलन में होने वाले कार्यक्रमों की सूचना दी। मंच संचालिका ब्र.कु.गीता ने संस्थान के बारे में बताया तथा अतिथियों का हार्दिक स्वागत भी किया।

सृष्टि रंगमंच पर हम सभी एक्टर्स हैं : ग्रेसी सिंग

लगान, मुन्नाभाई एम.बी.बी.एस, अरमान जैसी कई बड़ी फ़िल्मों एवं टी.वी.सीरियलों में अभिनय कर दर्शकों का दिल जीतने वाली फिल्म अभिनेत्री ग्रेसी सिंह ने ब्रह्माकुमारीज़ व्यापार एवं उद्योग सेवा प्रभाग के द्वारा आयोजित चार दिवसीय सेमिनार में भाग लेने के पश्चात रेडियो मधुबन 90.4 एफ एम से मुलाकात की। उन्होने अपना अनुभव सांझा करते हुए कहा कि एक्टिंग करने से उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान को जीवन में लाना और भी सहज हो गया है, उन्हें याद रहता है कि इस सृष्टि रंगमंच पर भी हम एक्टर हैं। यहाँ का अलौकिक वातावरण हमें स्वर्ग सा महसूस होता है। यहां के सभी भाई-बहनें ईश्वर के प्रति समर्पित रूप से कार्य करते हैं। यहां प्यार का शासन है। आपने कहा कि आध्यात्मिकता में निश्चय हो और कैरियर में हिम्मत हो, तो विजय सहज सम्भव है। राजस्थान के बारे में आपने कहा कि शूटिंग के दौरान मैंने राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर का आनंद लिया हुआ है, इस धरती से मुझे जो प्यार मिला है इसके लिए मैं सबको धन्यवाद एवं शुभ कामनाएं देती हूं। उन्होने रेडियो को टीवी से अधिक महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि घर में या ऑफिस आते जाते रेडियो सुनकर ज्ञान बढ़ाना व मनोरंजन का आनन्द लेना आसान होता है।

विकास के लिए ग्रामीण सशक्तिकरण अनिवार्य

आध्यात्मिक सम्मेलन में उत्तर प्रदेश एवं हरियाणा से सहस्त्रों पंचों-सरपंचों ने लिया भाग।

गुड़गांव (ओ.आर.सी.)। हमारा देश गांवों का देश है। देश के समुचित विकास के लिए गांवों का विकास अनिवार्य है। सरपंच गांव के मुखिया होते हैं जिन्हें गांव में परमेश्वर की नज़र से देखा जाता है।

उक्त विचार प्रदेश कांग्रेस के संगठन सचिव राहुल राव ने कार्यक्रम में उपस्थित सरपंचों को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होने कहा कि सरकार द्वारा चलाए जा रहे ग्रामीण सशक्तिकरण का अभियान बिना आपके सहयोग के पूरा नहीं हो सकता। ऐसी स्थिति में मुझे यह देख कर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि आप स्वयं आध्यात्मिक ज्ञान के माध्यम से नैतिक मूल्यों को धारण करने हेतु यहां पधारे हुए हैं। देश व विदेश में नैतिक मूल्यों की स्थापना व विश्व शांति हेतु ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि आज दक्षिणी अफ्रीका तक के लोग यहां पर आकर ब्रह्माकुमारीज़ के आध्यात्मिक ज्ञान का फायदा उठा रहे हैं। उन्होंने उपस्थित सरपंचों का आह्वान किया कि वे नियमित रुप से स्वयं तथा अपने गांव के लोगों को यहां लाकर आध्यात्मिक ज्ञान से लाभान्वित करें।

ओ.आर.सी.की निदेशिका ब्र.कु.गीता ने कहा कि आज के इस वैज्ञानिक युग में हमने भौतिक क्षेत्र में तो काफी उन्नति की है। सड़कें, मोबाईल, कम्प्यूटर तथा इन्टरनेट सहित सूचना एवं तकनीक के क्षेत्र में भी हमने काफी उन्नति की है। लेकिन एक क्षेत्र ऐसा है जहां हम पर्याप्त उन्नति नहीं कर पा रहे हैं। आज सब कुछ है लेकिन शान्ति नहीं है। शान्ति हम प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं, इसका कारण यह है कि हम शान्ति गलत जगह खोजते हैं। शान्ति तो हमारे अंदर है। जिस दिन वास्तव में हमें इस तथ्य का ज्ञान हो जाएगा कि हम देह नहीं आत्मा हैं और उस परमपिता की संतान हैं जो शान्ति का अथाह सागर है तो हमें स्वयं शान्ति प्राप्त होने लगेगी। उन्होंने कहा कि हमें एक बात सदैव याद रखनी चाहिए कि यदि हमें संसार को बदलना है तो सर्वप्रथम स्वयं को बदलना होगा। स्व परिवर्तन से ही विश्व परिवर्तन हो सकता है। हमारा देश गांवों का देश है और आप हमारे देश के गांव में रहने वाले ग्रामीणों के पथ प्रदर्शक हैं। अत: आप को चाहिए कि आप एक आदर्श ग्रामीण नेतृत्वकर्ता की भूमिका का निर्वहन कर राष्ट्र की उन्नति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें।

ब्र.कु.बृजमोहन ने कहा कि अगर हम पांच बुराईयों से दूर रहें तो न केवल हम खुश रहेंगे बल्कि पूरा विश्व खुश रह सकेगा। उन्होंने कहा कि मनुष्य की तीन प्रमुख आवश्यकताएं होती हैं रोटी, कपड़ा और मकान और इन तीनों की पूर्ति का स्रोत गांव ही है। ऐसी स्थिति में हमें मानव जाति की खुशहाली के लिए गांवों पर विशेष ध्यान देना होगा।

इस अवसर पर वहां उपस्थित सरपंचों को राजयोग के अभ्यास से खेती में होने वाले लाभों से अवगत कराया। सभी ने शांति अनुभूति की।

ओ.आर.सी.। दीप प्रज्जवलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.गीता, ब्र.कु. बृजमोहन, ब्र.कु.राजकुमारी, राहुल राव तथा अन्य।

भारत - वार्षिक 170 रुपये
तीन वर्ष 510 रुपये
आजीवन 4000 रुपये
विदेश - 2000 रूपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट माउण्ट आबू) द्वारा भेजें ।

ओम शान्ति मीडिया
सम्पादक : ब्र.कु.गंगाधर
ब्रह्माकुमारीज, शांतिवन, तलहटी
पोस्ट बॉक्स नं. - 5, आबू रोड (राज.) 307510
Enquiry For Membership, Mob. No. - 09414006096
(M)- 9414154344, E-mail : mediabkm@gmail.com,
omshantimedia@bkivv.org, webside:www.omshantimedia.info

प्रति

RNI NO RAJHN/2000/721, NEWS PAPER TO POST CONCSSIONAL REGISTRATION NO. RJ/SIROHI/9623/12-14, 12TH TO 14 TH, 22 ND TO 24TH POSTED TO SHANTIVAN POST OFFICE
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, सलाहाकार संपादक: कमल दीक्षित, प्रकाशक: ब्र.कु.करूणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज् मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ.) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट साल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।